प्रेरणा स्रोत
स्व. श्री यशवंतजी घोड़ावत

RNI No. MPHIN/2018/76422

माही की गूंज

बेबाकी के साथ..सच

Www.mahikigunj.in, Email-mahikigunj@gmail.com

वर्ष-03, अंक - 03 (साप्ताहिक) खवासा, गुरुवार 22 अक्टूबर 2020 पृष्ठ-8, मूल्य -5 रुपए

सुविचार

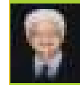

यदि लोग आपके लक्ष्य पर हंस नहीं रहे हैं तो आपके लक्ष्य बहुत छोटे हैं।

अजीम एच प्रेमजी

अवैध जहरीली शराब की फेक्ट्री पकड़ी, 5 आरोपी गिरफ्तार

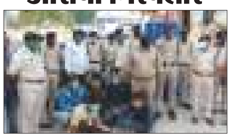

माही की गूंज, रतलाम। राघवेन्द्र सिंह डोडिया

उज्जैन में जहरीली शराब से हुई मौतों के बाद रतलाम में भी जहरीली शराब की फैक्ट्री पकड़ाई है, बिलपांक थाने के झर गांव में मौत का सामान बनाने वाली फैक्ट्री पकड़ाई है। यहां यूरिया और स्प्रीट मिलाकर यह जहरीली शराब तैयार की जाती थी और इसे ग्रामीण इलाकों में बेचा जाता था। इस फैक्ट्री से पुलिस ने जिसमे बड़े पैमाने पर हजारो खाली बोतले, नकली होलोग्राम, पैकिंग मशीन सहित बड़े यूरिया और स्प्रीट की दर्जनों केन जप्त की है।

इस मामले में पुलिस ने 5 आरोपियों को गिरफ्तार किया है, जबकि मास्टरमाइंड अभी फरार है, खास बात यह की जहरीली शराब को कुएं में छुपाकर रखा जाता था और जिस स्प्रीट से यह शराब बनाई जा रही थी, वह भी पानी की केनो में भरकर उज्जैन जिले से रतलाम में लाया गया था, ताकि पुलिस को शक ना हो, कुछ दिनों पहले एक शराब बेचने वाले शख्स से पूछताछ में इस जहरीली शराब फैक्ट्री का खुलासा हुआ है। जिसके बाद एसपी गौरव तिवारी ने टीम बनाकर इस फैक्ट्री पर दबिश दी तो मौत का सामान बनाने वाली फैक्ट्री का पर्दाफाश हो गया। वही एसपी इस मामले में सम्बंधित थाने के पुलिस कर्मियों की संलिप्तता की भी जाँच कर रहे है। लॉकडाउन के दौरान रतलाम में भी जहरीली शराब से 10 से ज्यादा मौते हुई थी, लेकिन इस मामले की छोटी-मोटी कार्रवाई के बाद, मामले को ठंडे बस्ते में डाल दिया गया, अब देखना यह है की कौन सी बड़ी मछलियां इस गिरोह को संचालित कर रही है और बिलपांक पुलिस इस गिरोह के मास्टर माइंड की गिफ्तारी कब तक करती है।

दीवाली से पहले शिवराज सरकार 4.37 लाख कर्मचारियों के खाते में डालेगी 25 फीसदी एरियर

भोपाल, एजेंसी। मध्य प्रदेश में त्योहारों के ठीक पहले शिवराज सरकार ने कर्मचारियों को बड़ा तोहफा दिया है। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने मंगलवार को प्रदेश के 4 लाख 37 हजार कर्मचारियों को सातवें वेतनमान के एरियर की तीसरी किस्त की 25 फीसदी राशि दीवाली से पहले देने की घोषणा की। इसे कर्मचारियों के खाते में डाला जाएगा। साथ ही इसी वित्तीय वर्ष में पूरे एरियर का भुगतान कर दिया जाएगा। इससे सरकार के खजाने में करीब 800 करोड़ का अतिरिक्त भार आएगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि जिन कर्मचारियों का वेतन 40 हजार रुपए महीने से कम है, उनको त्योहार के लिए 10 हजार रुपए एडवांस में दिया जाएगा। यह एडवांस वह 31 मार्च तक कभी भी ले सकते हैं, मुख्यमंत्री ने कहा कि, कर्मचारियों का त्योहार अच्छा मने।

गूंज खुलासा : सेक्स रैकेट चलाने वाले दलाल सोशल मीडिया पर अलग-अलग लड़कियों के फोटो भेजकर करते है ग्राहकों को आकर्षित

चल रहे सेक्स रैकेट का हुआ पर्दाफाश आठ महिलाएं व तीन पुरूष गिरफ्तार

माही की गूंज, रतलाम।

मूखबिर की सूचना पर रतलाम के बापू नगर इलाके में पुलिस ने एक मकान पर छापा मारकर सेक्स रैकेट का पर्दाफाश किया। पुलिस ने सेक्स रैकेट में शामिल छह महिलाओ और तीन पुरुषो को धर दबोचा। उक्त रैकेट में शामिल दो महिलाए पुलिस की गिरफ्त में नहीं आ पाई थी जिन्हें दुसरे दिन ही पुलिस ने धर दबोचा। यह सेक्स रैकेट किराए के मकान में चलाया जा रहा था। पुलिस कंट्रोल रूम पर प्रेसवार्ता में सीएसपी हेमंतसिंह चौहान ने बताया कि, पुलिस को मुखबिर से इस आशय की सुचना मिली थी कि, बापू नगर में रतलाम पब्लिक स्कुल के पास अनीता नामक एक महिला अपने किराए के मकान में लड़कियों और महिलाओ से देह व्यापार करवा रही है। पुलिस ने उक्त मकान की खोजबीन की सुचना की पुष्टि होने पर पुलिस की टीम ने शुक्रवार की रात में दबिश दी तो मकान के भीतर बने कमरों में महिला व पुरुष आपत्तिजनक अवस्था में मिले। गिरफ्तार किए गए आरोपियों के नाम अनीता पति मनोज सोनी (30) नि. बापू नगर, भावना पिता अनिल शर्मा (19) नि बापू नगर, सिमरन पति सादिक चूहा (24) नि मोहन नगर, पूजा पिता मोहनलाल चौहान (24) नि ग्राम खेतलपुर, हीना उर्फ नेहा हरिजन पति अर्जुन (27) नि डोंगरे नगर, दीपमाला पति सुनील जैन (36) नि गायत्री मंदिर के पीछे नामली, पवन पिता भेरूलाल राव (35) नि नीमचौक स्थानक के पास, सोनू पिता सुरेंद्र कुमार राठौर (28) नि दीनदयाल नगर, कुंदन पिता भीमसिंग राजपूत (19) नि मोती नगर, पूछताछ में इन लोगो ने देहव्यापार में लिप्त होने की बात को कबूल किया। पुलिस ने मांमले में कुल आठ महिलाओ व तीन पुरुषो के खिलाफ प्रकरण दर्ज कर छह महिलाओ व तीन पुरुषो को गिरफ्तार कर लिया था, जबकि दो फरार महिला काजल पति कैलाश डामर नि. सैलाना बस स्टैंड और जोया उर्फ डॉली पति शाहरुख खान नि. ग्रीन सिटी को दुसरे दिन ही गिरफ्तार कर लिया गया।

रतलाम का फलफूल रहा देह व्यापार, लॉज और होटलों में हो रहे अनैतिक काम

विगत कई वषों से देह व्यापार के धंदे ने रतलाम शहर और उसके आसपास के क्षेत्रो में बड़ी मात्र में फेल चुका है और बड़े और सम्भान्त परिवार की भी कई महिलाएं इस धंदे में उतर गई है। नगर की होटल और लाजो में प्रेमी जोड़ो और वेश्यावृत्ति में उतरी महिलाओं को एंट्री बिना डाक्युमेंट के दी जाती है। शराब, सट्टे की तरह ये धंदा भी पुलिस की नजरों के सामने है लेकिन आपसी तालमेल के कारण ज्यादातर मामलों में शिकायत के बाद भी देह व्यापार में लिप्त लोग पकड़े नही जाते हैं, लेकिन इस बार पुलिस द्वारा की गई कार्यवाही की सराहना की जा रही है और उम्मीद लगाई जा रही है कि, इस धंदे से जुड़े और लोग जल्द ही पुलिस गिरफ्त में होंगे।

दलालों के माध्यम से हो रहा है पूरा खेल

देह व्यापार को लेकर नगर सहित अंचल में बड़ी संख्या में दलाल सक्रिय हैं जो न केवल नगर बल्कि आस-पास के जिलो में लड़कियां सप्लाई करते हैं और बड़े शहरों से भी कार्ल गर्ल को बुलाकर परोसते है, ज्यादातर दलाल कोडवर्ड मे ग्राहकों से बात करते हैं। देह व्यापार आज भी नगर की कई कॉलोनियों से संचालित हो रहा है। गूंज के मुखबिर अनुसार हमें रतलाम के एक सेक्स रेकैट के दलाल का पता चला है जिसका मोबाइल न. 7000776931 है, जो अपने आपको अकरम अपने ग्राहको को नाम बताता है असल में क्या नाम है यह तो पुलिस की जांच का विषय है। परंतु यह दलाल जो भी इसके संपर्क में एक बार आता है या इससे फोन पर कोई संपर्क करने की कोशिश करता है तो वाट्सअप के माध्यम से अलग-अलग लडकियों के फोटो भेजकर ग्राहको को आकर्षित करता है और 15 सौ से 10 हजार रूपए का रेट तय करता है। यहा तक कि, औरतो की दलाली करने वाला यह दलाल ग्राहक को रतलाम में रूम की व्यवस्था या रतलाम के नामी-ग्रामी होटलो में रूकवाने की पुरी गारंटी लेकर व्यवस्था करवाता है। गूंज को मिली जानकारी अनुसार रतलाम के समिपस्थ जिले के एक सभ्य परिवार के सदस्य के मोबाइल न. उक्त सेक्स रेकैट चलाने वाले दलाल को गलती से कही मिल गए तो, इसने उस व्यक्ति के मोबाइल पर भी अलग-अलग कई लडकियो के फोटो उन्है आकर्षित करने के लिए भेजे, जिसपर सभ्य परिवार के सदस्य ने उक्त दलाल को फोन कर धमकाया भी की हमें यह फोटो क्यो भेजे? हम पुलिस में शिकायत कर रहें है, जिस पर दलाल ने फोन पर माफिमांग कर कहा आज के बाद कभी आप के मोबाइल पर एसी लडकियो के फोटो नही आएगें।

सबसे बडी आश्चर्य कि बात यह है कि, इस तरह से आसानी के साथ इस जैसे कई दलाल सोशल मिडीया के माध्यम से संपर्क कर सेक्स रेकेट को खुल्लेआम चला रहे है पर पुलिस फिर भी इस पुरे कारोबार को लेकर अपने आप को अनभिज्ञ बताती है जो यह दर्शाता है कि, यह सेक्स रेकेट बडे लेन-देन के साथ खुल्लेआम संचालित हो रहा है।

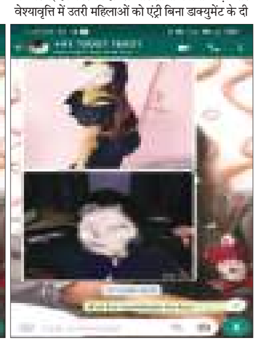
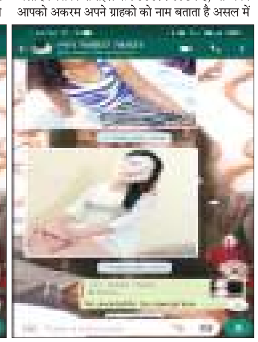

माही की गूंज के मुखबिर से मिले सेक्स रेकेट चलाने वाला दलाल द्वारा वाट्सअप पर अलग-अलग लडकियों के फोटो ग्राहको को भेज उन्हे आकर्षित कर मोटी रकम वसुलते है।

पूरे लॉकडाउन में मजदूरी को तरसे ग्रामीण

दो साल से पंचयात के रुके पड़े विकास कार्य, पंचायत के नुमांइदो के भ्रष्टाचार की सजा भुगत रही जनता

माही की गूंज, पेटलावद। राकेश गेहलोत

पेटलावद नगर से सटी ग्राम पंचायत खोरिया की जनता पिछले दो साल से पंचायत के जवाबदारो के भ्रष्टाचार की सजा भुगत रही है। पिछले दो साल से यहां के विकास कार्य पूरी तरह से रुके पड़े हैं, पंचायत के खाते सील पड़े हैं, यहा सचिव और सरपंच केवल कागज पर है। कोरोना कोविट-19 संक्रमण के चलते बेरोजगार ग्रामीणों के लिए शासन ने कई कार्य रोजगार के लिए शुरू किए लेकिन पूरे लॉकडाउन में यहा कोई कार्य नही हो पाया।

जाच में पाया गया 27 लाख का भ्रष्टाचार, कार्रवाई न हो के नाम पर कर रहे है वसूली का तोलमोल

2019 में ग्राम पंचायत में हुए भ्रष्टाचार की शिकायत के बाद ग्राम पंचायत में हुए कार्यो की जांच दल गठित की गई, जिसमें 26 लाख से अधिक की लागत के तो सिर्फ सीसीरोड ही गायब मिले जो की बिना बने फर्जी बिल लगाकर राशि आहरण कर ली गई थी। साथ ही लगभग 66 हजार के फर्जी व्यय के बिल जिनका भुगतान सरपंच पति रामलाल अरड को किया गया था, कार्यवाही के लिए प्रतिवेदन जिला अधिकारी को भेजा जिस पर आज तक कोई निर्णय नही हुआ, जिला अधिकारी द्वारा सरपंच संभुडी अरड को धारा 40 और 92 के तहत हटाकर राशि वसूलने का आदेश जारी किया गया।

जाच प्रतिवेदन जिसमें 27 लाख के लभगभ का गबन होना पाया।

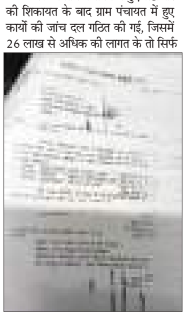

जिला पंचायत से संचालक पंचायतराज भोपाल को भेजा गया पत्र, जिसका जबाब नही मिला।

सरपंच पर धारा 40, 92 के तहत चल रही कार्रवाई के बाद भी सरपंच बन गया प्रधान।

न सरपंच हटी न वसूली हुई न काम हुवा

कार्यवाही के नाम पर केवल ग्राम पंचायत के खाते सील कर भुगतान रोक दिया गया लेकिन भ्रष्टाचार पाए जाने के बाद आज तक सरपंच न तो हटाई गई न ही किसी दूसरे पंच को सरपंच के दायित्व दिए गए न किसी प्रकार की राशि की वसुली हुई और न ही जिन कार्यो के पैसे बिना कार्य के ही निकाले गए थे वो कार्य करवाए गए। सबसे बड़ी बात सरपंचो का एक साल का कार्यकाल प्रधान के रूप में बढ़ने के बाद जिले में पत्र भेज कर संचालक, पंचायतराज संचालनालय भोपाल को पत्र भेज कर सरपंच को धारा 40 और 92 की कार्यवाही प्रचलित होने पर प्रधान पद पर रहने के सम्बंध में मार्गदर्शन मांगा था, लेकिन भोपाल से कोई मार्गदर्शन नही मिला, न ही जिले के अधिकारियों ने इस दिशा में कोई पहल की और खोरिया पंचयात की महिला सरपंच इतने बड़े भ्रष्टाचार के बाद भी प्रधान के रूप में कार्य कर रही है।

ग्रामीण भुगत रहे हैं परिणाम

खोरिया ग्राम पंचायत के ग्रामीणों का कहना है कि, सरपंच ओर उसके पति ने मिलकर ग्राम पंचायत के कार्यो में भ्रष्टाचार किया और शासन की राशि हड़प ली लेकिन सरपंच के इस कृत्य की सजा ग्रामीण भुगत रहे हैं। विगत दो साल से कोई कार्य पंचयात में नही हो रहा है, लॉकडाउन के दौरान भी ग्रामीण मजदूरी के लिए भटकने पर मजबूर हो गए। ग्राम पंचायत में भेजे गए नए सचिव का कहना है कि, शासन ने खाते से लेन-देन बन्द कर रखा हैं जिससे कार्य नही कर पा रहे हैं।

होना था प्रकरण दर्ज

लगभग 27 लाख का गबन पाए जाने के बाद भी ग्राम पंचायत के सरपंच-सचिव पर आपराधिक प्रकरण दर्ज नही किया गया जिससे साफहै पूरी बंदरबाट में अधिकारी भी शामिल हैं या फिर कार्रवाई के नाम पर जिम्मेदारो ने सरपंच और सचिव से मोटी रकम वसूल ली या वसूलने का तोलमोल आज भी चल रहा है। जिसके चलते केवल समय काट कर सरपंच के इस कार्यकाल पूरे होने और भ्रष्टाचार को फाइलों में दबाने की तैयारी की जा रही है। पूरे मामले में सरपंच-सचिव के साथ-साथ कार्य के मूल्यांकन करने वाले उपयंत्री ओर फर्जी बिल देने वाली एजेंसियो पर भी अपराध बनता है जिन्होंने बिना कार्य किए कार्यो का मूल्यांकन कर दिया और बिना माल दिए फर्जी बिल लगा कर भुगतान लेकर आपस मे बाट लिया।

30 लाख केन्द्रीय कर्मचारियों को दिवाली तोहफा

नई दिल्ली ऐजेन्सी। मोदी सरकार ने दिवाली से पहले 30 लाख 70 हजार केन्द्रीय कर्मचारियों को बोनस देने का फैसला किया है। केन्द्रीय मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने कैबिनेट फैसले की जानकारी देते हुए बताया कि, कर्मचारियों को बोनस देने से सरकार पर 3 हजार 737 करोड़ रुपए का बोझ आएगा। विजयदशमी या दुर्गा पूजा से पहले ही 30 लाख केंद्रीय कर्मचारियों को 3 हजार 737 करोड़ रुपए के बोनस का भुगतान तुरंत शुरू होगा। कर्मचारियों को डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर के जरिए एक ही किश्त में बोनस दिया जाएगा।

अमर्यादित भाषा से राजनीति का गिरता स्तर

माही की गूंज, झाबुआ। राजनीति में साम, दाम, दंड, भेद सब जायज है लेकिन भाषाई गरिमा का पालन न करना किसी भी स्थिति में स्वीकार नहीं किया जा सकता है, एक भाषा ने ही तो राजनीति का सम्मान अब तक बचा के रखा है, लेकिन प्रदेश के इतिहास में पहली बार होने जा रहे एक साथ 28 विधानसभा उपचुनाव में सत्ताधारी दल और भूतपूर्व सत्ताधारी दल के बीच जुबानी स्तर इतना नीचे चला गया है जो सभ्य समाज में सही नहीं कहा जा सकता है। प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ ने भाजपा की एक मंत्री (जो कमलनाथ सरकार में भी मंत्री थी) के बारे में एक चुनावी सभा में अमर्यादित भाषा का प्रयोग किया गया, जिसके बाद प्रदेश ही नहीं देश में भी सियासी भूचाल आ गया। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान सहित पूरी भाजपा ने इस मुद्दे को हाथों हाथ पकड़ लिया और पूरी सरकार में 2 घंटे का मौन धरना पूरे प्रदेश में दीया, यहां तक की मामला कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी को पत्र भी लिखकर कमलनाथ पर कार्यवाही की मांग की। वहीं कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने भी इस कथन से अपनी असहमति जताई है, बावजूद इसके पूर्व मुख्यमंत्री ने केवल खेद जताया है और माफी मांगने से इनकार कर दिया है।

निसंदेह यह चुनाव दोनों ही दलों के लिए जीवन-मरण का चुनाव है कांग्रेस अपनी सरकार की वापसी के लिए जोर लगा रही है, वहीं भाजपा अपने सरकार के स्थायित्व के लिए लड़ रही है, लोकतंत्र में प्रत्येक चुनाव महत्वपूर्ण होता है, लेकिन इसका यह मतलब तो नहीं की आप तमाम मर्यादाओं का गला घोट दो। चुनाव आचार संहिता में तमाम बंदीशो के साथ भाषाई मर्यादा का पालन करना भी अनिवार्य होना चाहिए, साथ ही चुनाव आयोग को भी चाहिए कि वह इस प्रकार के अमर्यादित कथनों पर स्वयं संज्ञान लेकर उचित कार्यवाही करें जिससे राजनीतिक दलों के बीच अमर्यादित भाषा का उपयोग ना हो।

मुरैना सीट का हाल

चार बार कांग्रेस और पांच बार भाजपा की हुई जीत

राकेश मावई-रघुराज कंसाना में होगी टक्कर

2.53 लाख मतदाता करेंगे मुरैना के भाग्य का फैसला

आइटम वाले के बाद अपनों से घिरे कमलनाथ

राहुल के कहने पर माफी मांगे कमलनाथ : मानक

कांग्रेस में संग्राम

सांची में भितरघात से चिंतित भाजपा कार्यकर्ताओं में सीएम ने भरा जोश

भारतीय जनता पार्टी अपनी मां है, और मां का कर्ज उतारने का समय आ गया

छतरपुर में शिवराज ने साधा निशाना

कमलनाथ माफी नहीं मांग रहे, राहुल जी ने भी लोगों ने समझाया था, पर वह भी नहीं माना

राहुल गांधी की बात भी नहीं मान रहे हठ कमलनाथ

प्रदेश के युवाओं को कांग्रेस ... कमलनाथ का विजन : शर्मा

आइटम मामले में पूर्व मंत्री ने दिया धरना

वे क्या जाने कार्यकर्ताओं की ताकत : वीडी शर्मा

दलितों का वोट हथियाकर कांग्रेस ने उन्हें दिया धोखा

इमरती देवी को चायल पर सिंधिया का पलटवार

कमलनाथ- दिग्विजय का करूंगा पर्दाफाश

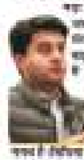

दिग्विजय सिंह ने महिला आयोग पर साधा निशाना

क्या राष्ट्रीय महिला आयोग 'लव जिहाद' को परिभाषित करेगा ?

महिला आयोग से पूछी 'लव जिहाद' की परिभाषा

आईटीआई में अब तक 29 हजार से ज्यादा विद्यार्थियों ने लिया प्रवेश

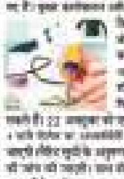

मंदसौर में नरेंद्र सिंह तोमर ने कांग्रेस सरकार की गिनाई नाकामियां

कांग्रेस के पास बताने को कोई उपलब्धि नहीं, उपचुनाव में सभी सीटें जीतेगी भाजपा

शोभा ओझा को पद से बर्खास्त करने की मांग

भाजपा ने शोभा ओझा सहित चुनाव आयोग से की पांच शिकायतें

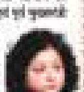

कमलनाथ की शिकायत

राज्यपाल ने शहीद पुलिस जवानों को दी श्रद्धांजलि

पुलिस असामाजिक तत्व का पूरी कठोरता के साथ दमन करें

विभिन्न राज्यों में अमर शहीद ... प्रदेश के जवान शामिल 100

आकाशीय बिजली से हुई एक व्यक्ति व दो बैलो की मौत

माही की गूंज, रायपुरिया। उमाशंकर पाटीदार

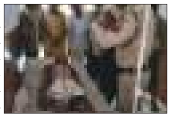

रायपुरिया के समीप ग्राम रतांबा में मंगलवार को आकाशीय बिजली गिरने से रामचंद्र पिता मडीया बारिया (45) की मृत्यु हो गई। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार रामचंद्र अपने घर से के आंगन में ही खड़ा था कि, अचानक बिजली गिरी और वह बेसुध होकर गिर गया, बिजली गिरने के बाद रामचंद्र को रायपुरिया सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लाया गया, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। विगत कई दिनों से बिना मौसम मावठे की बारिश हो रही है और आकाशीय बिजली लगातार गिर रही है जिसकी चपेट में लोग ओर जानवर आ रहे है। इससे पहले भी सोमवार को ग्राम पंचपीपला में भी आकाशीय बिजली गिरने से दो बैल की मौत हो गई थी।

बस और ट्रक में भिंड़त, तीन लोग जख्मी, बस खाली होने से टला बड़ा हादसा

माही की गूंज, पेटलावद। मंगलवार दोपहर पश्चात पेटलावद-बामनिया मार्ग पर पेट्रोल पंप के आगे लक्झरी बस और ट्रक के बीच आमने-सामने जोरदार भिड़ंत हो गई, जिसमें तीन लोग जख्मी हो गए। गानिमत थी कि बस खाली थी जिससे बड़ा हादसा होते-होते टल गया, टककर के बाद बस सडक से उतर कर खेत में बने कुए की पाल से जा कर अटक गई। वही ट्रक का ड्राइवर फंस गया जिसे बड़ी मशक्कत के बाद बहार निकाला जा सका। मौके पर पुलिस ने पहुचकर घायलों को हॉस्पिटल पहुचाया। दुर्घटना के बाद काफी देर तक यातायात बाधित रहा। दुर्घटना में दोनों वाहनों में हुए नुकसान को देखकर भिड़ंत का अंदाजा लगाया जा सकता है कि किस तरह से भिडंत हुई है, यदि बस में सवारी होती तो कई जाने जा सकती थी।

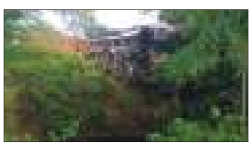

प्रधानमंत्री आवास की राशि में हेरफेर का बड़ा खुलासा

बैंक व ग्राम पंचायत की मिलीभगत से नहीं मिली राशि

मृत हितग्राही के बैंक खाते से चौकीदार के खाते में डाली राशि, लेकिन चौकीदार के खाते से मृतक के परिवार को नही दी राशि

माही की गूंज, पेटलावद।

प्रधानमंत्री आवास योजना की राशि मे हेराफेरी का बड़ा मामला सामने आया है। पेटलावद विकास खण्ड की ग्राम पंचायत बेकलदा में आवास योजना की राशि का भुगतान नही होने की शिकायत की थी, जिसमे ग्राम पंचायत सचिव शैलेन्द्र सिंह, रोजगार सहायक सुधाकर बैरागी, जनपद में पदस्थ आपरेटर नानूराम जामले ओर चौकीदार अमरसिंह खड़िया पर राशि के हेरफेर के गंभीर आरोप लगाए थे, मामले को गूंज में प्रमुखता से प्रकाशित किया था। मामला सामने आने के बाद सभी पक्ष अपने आपको पाक साफ बताने में जुट गए, पूरे मामले की खोजबीन करने पर चोकाने वाले तथ्य सामने आए और मृत हितग्राही के खाते से हुई राशि की हेराफेरी में बैंक की बड़ी भूमिका सामने आ रही है।

खाता क्रमांक की गलती से एक दूसरे के खाते में गई राशि

उक्त मामले में सबसे पहले गूंज ने आपरेटर नानूराम जामले से संपर्क किया जिसका कहना है कि, हमारे यहाँ से पूरी राशि बराबर हितग्राही के खाते में आबंटित की गई और चौकीदार अमरसिंह खड़िया के नाम से भी आवास स्वीकृत हुआ था उसकी राशि उसके खाते में गई, जो रिकॉड आपरेटर जामले ने उपलब्ध करवाया उसमे भुगतान की पूरी जानकारी थी, लेकिन राशि किन खाता नम्बर में डाली गई उसकी जानकारी नही थी, इसके लिए जामले ने जनपत में पदस्थ आपरेटर निनामा से बात करने को कहा, जो राशि आंबटन की एंट्री का कार्य देखता है। मामले में निनामा ने बताया कि, भूल वश दोनों हितग्राही थावरिया वसुनिया ओर चौकीदार अमरसिंह खड़िया के खाता क्रमांक ऊपर नीचे होने से दोनों खातो में एक दूसरे की राशि चली गई जिसके लिए बैंक को जनपत से पत्र लिखवा कर दोनों खातों में गई राशि को एक दूसरे के खाते में डालकर भूल सुधार करने के लिए बैंक को भेज दिया था।

जनपत सीईओ ने बैंक को वारिस को एक लाख बीस हजार भुगतान के लिए लिखा पत्र।

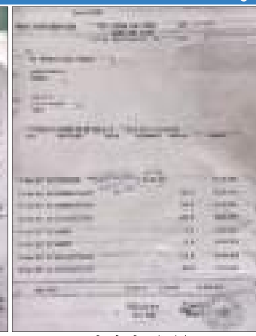

मृतक हितग्राही थावरिया का बैंक स्टेटमेंट।

बैंक स्टेटमेंट से हुआ बैंक की लापरवाही का खुलासा

हितग्राही थावरिया के पुत्र नन्दू की शिकायत के बाद सभी जिम्मेदार भुगतान होने की बात कहकर पल्ला झाड़ते नजर आए, अब भुगतान कहा और किसके खाते में गया इसकी जानकारी बैंक स्टेटमेंट लेकर प्राप्त की जिसमे खुलासा हुआ कि, जनपत के पत्र क्रमांक/प्र.आ./2017/3285 29 मई 2017 के आधार पर थावरिया के खाते में 21 अप्रैल 2017 और 23 मई 2017 को अगल-अलग किस्त में 40-40 हजार दो किस्त डाली गई और मुख्य कार्यपालन अधिकारी पेटलावद के 29 मई के पत्र के आधार पर बैंक ने 31 मई 2017 को दोनों किश्त के कुल अस्सी हजार रूपए चौकीदार अमरसिंह खड़िया जो कि आवास का हितग्राही भी है उसके खाते में ट्रांसफर कर दिए।

मृतक के खाते में नही डाली बैंक ने राशि

मुख्य कार्यपालन अधिकारी के पत्र के अनुसार खाते में गलत गई राशि को एक दूसरे के खाते में समायोजित करना था, लेकिन बैंक द्वारा मृतक हितग्राही के खाते से राशि अमरसिंह खड़िया के खाते में तो डाल दी, लेकिन अमरसिंह के खाते में गलती से जमा हुई थावरिया की राशि वापस थावरिया के खाते में बैंक द्वारा नही डाली गई, जिसके पीछे हितग्राही के मरने और परिवार के अनपढ़ होने का लाभ उठाकर बैंक से मिलीभगत कर राशि की बंदरबाट कर ली गई। बैंक की लापरवाही स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही है और मृतक के खाते में बची एक किस्त 40 हजार रूपए का भुगतान 12 मार्च 2018 को हितग्राही के पुत्र नन्दू का वारिस होने के नाते भुगतान मय ब्याज किए गए। जबकि मुख्य कार्यपालन अधिकारी पेटलावद द्वारा प्रधानमंत्री आवास की राशि एक लाख बीस हजार रुपए वारिश नन्दू वसुनिया को भुगतान करने के लिए बैंक को पत्र व्यवहार किया था, लेकिन बैंक द्वारा थावरिया को केवल एक किश्त का भुगतान किया बाकी पैसे दूसरे हितग्राही चौकीदार के खाते में डाल दिए।

सचिव, रोजगार सहायक, चौकीदार और बैंक की मिलीभगत से लगाया चुना

हितग्राही के वारिस के खाते में एक किश्त आने के बाद बाकी की राशि के लिए नन्दू ने सीएम हेल्पलाइन पर शिकायत दर्ज करवाई जिसके बाद नंन्दू को ग्राम पंचायत भवन में बुलाकर गवाहों के सामने 40 हजार रुपए दिए गए और बाकी एक किस्त का भुगतान बाद में करने का कहकर शिकायत बन्द करवा दी, जिसके बाद से नन्दू एक किश्त की राशि के लिए सरकारी कार्यालयों के धक्के खा रहा है। मामले में सचिव शैलेन्द्र सिंह से बात करना चाही तो सचिव ने काल रिसीव नही किया, रोजगार सहायक सुधाकर बैरागी ने मामले से पल्ला झाड़ते हुए शिकायतकर्ता को झूठा बताने का प्रयास किया और कहा कि, नंन्दू ओर अमरसिंह जाने सरपंच के सामने नन्दू को दोनों किश्त दे दी, तो चौकीदार हितग्राही अमरसिंह खड़िया को जब काल किया तो उसका कहना है कि, जितनी शिकायत करना करो और जीतनी खबर लगाना है लगाओ मेरा कुछ नही बिगड़ेगा मेरा ससुर सरपंच ओर मेरा रिश्तेदार जनपत है जो हो वो कर लेना मैने मेरे पैसे ही खाते से निकाले, जो आवास के शासन ने डाले थे। वही ग्राम पंचायत बेकलदा के सरपंच का कहना है कि, मेरे सामने नन्दू को केवल 40 हजार ही दिए हैं उसको उसकी पूरी राशि मिलना चाहिए, नन्दू की शिकायत सही हैं उसको मिलने वाली राशि मे हेराफेरी की गई है। जनपत सीईओ पूर्व में ही कह चुके हैं कि, मामला एसडीएम को भेज कर नन्दू की राशि चौकीदार से दिलवाई जाएगी, बैंक से कोई जवाबदार इस विषय मे बात करने को तैयार नही है ओर उनका कहना है पूर्व मैनेजर ने कैसे किया हमको नही पता। सभी जवाबदारो की बात सुनकर यही कहा जा सकता है कि, सभी इस मामले में अपनी भूमिका से बचने का प्रयास कर रहे हैं।

नगद भुगतान क्यो

नन्दू की शिकायत के बाद एक किश्त के 40 हजार रुपए का नगद भुगतान पंचयात में बुलाकर नन्दू को सचिव, रोजगार सहायक और चौकीदार, आपरेटर नानूराम जामले द्वारा सरपंच के सामने नगद किया गया जिससे साफहोता है कि, हितग्राही के मृत होने का लाभ उठाकर उसकी राशि मे बंदरबाट की गई थी, जो शिकायत निपटाने के लिए आधी राशि दे कर मामला दबा दिया गया, आवास योजना की राशि का भुगतान किसी परिस्थिति में नगद नही होता फिर नन्दू को 40 हजार रूपए बिना रिकॉर्ड के नगद क्यो दिए गए।

फिर की शिकायत

नन्दू द्वारा समस्त दस्तावेज ओर बैंक स्टेस्टमेंट प्राप्त कर मामले की दोबारा शिकायत दस्तावेजो के साथ जिला कलेक्टर झाबुआ और मुख्य कार्यपालन अधिकारी को दर्ज करवाई है, शिकायतकर्ता नन्दू ने बताया कि, यदि इसके बाद भी नन्दू को बकाया राशि का भुगतान नही होता है तो बैंक सहित सभी पक्षो के विरुद्ध न्यायालय की शरण में जाऊँगा।

जिला मीडिया प्रभारी योगेन्द्र नाहर मनोनीत

माही की गूंज, झाबुआ। भाजपा जिलाध्यक्ष लक्ष्मणसिंह नायक द्वारा रतलाम-झाबुआ-आलीराजपुर सांसद गुमानसिंह डामोर की अनुशंसा तथा सहमति पर भाजपा का नवीन जिला मीडिया प्रभारी योगेन्द्र नाहर को मनोनीत किया गया है। उनकी पार्टी के प्रति कर्तव्यनिष्ठा तथा लगनता को देखते हुए यह जिम्मेदारी सौंपी गई है। नाहर के भाजपा जिला मीडिया प्रभारी बनने पर भाजपा पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं तथा वरिष्ठजनों ने हर्ष व्यक्त किया है।

रोगों से निजात दिलाती है माँ कालिका, माता के दरबार में लोगों का होता है दुःख र्दद दूर

माही की गूंज, रतलाम।

रतलाम जिला मुख्यालय से करीब 50 किलोमीटर दूर पिपलोदा तहसील के गांव बचोड़िया मे स्थित माँ कालिका और रोग्यादेवी माता का प्राचीन मन्दिर स्थित है। जहॉ पर मन कि मनोकामनाएं ओर दुःख दर्द दूर होता है, मंदिर के मुख्य द्वार के सामने ही छोटा सा मन्दिर भैरव जी का है, माँ कालिका माता मन्दिर मे स्थिर एक साथ विराजमान माँ कालिका माता और रोग्यादेवी माता की प्रतिमा स्थापित की गई है। पूर्वजों की मानी जाए तो यहां पर पीपल के व्रक्ष से ही निकली थी दोनो मातारानी की मूर्तियां जिनको विधिविधान से मंदिर बनाकर मन्दिर में बिठाया गया। मन्दिर के पुजारी प्रकाश कुमावत ने बताया कि, यहा आने वाले भक्तो को माता जी की कृपा से कई रोगो से निजात मिला है। यहां पर आने वाले निःसंतान दम्पति को संतान की प्राप्ति होती है। वही लकवा, मन्दबुद्धि, किसी के सहारे चलने वाले को बिना सहारे चलकर भेजा जाता है, आदि रोगो के अलावा ऊपरी हवा से पीड़ित लोग यहा पर पांच से ग्यारह रविवार तक नियमित रूप से आते है। नवरात्र मे विशेष साधना आराधना और पूजा-पाठ का दौर चलता है। इस मंदिर पर अब दूर-दूर से श्रद्धालुओं का आना-जाना होता है। 1008 श्री स्व, नित्यानंद जी महाराज के करकमलों द्वारा इस मंदिर का जीर्णोद्धार किया गया था, अब यहां पर रतलाम जिले सहित अन्य जिलो के भी श्रद्धालुओं का आना-जाना शुरू हो गया है।

जान से मारने की नियत से हमला करने वाले पहुंचे जेल

माही की गूंज, शाजापुर। 24 जुलाई को फरियादी अजय अपने घर के अंदर था। उसके घर के सामने शीतला माता का ओटला है। वहां पर रास्ते व मंदिर निर्माण का कार्य चल रहा था तभी फखरूद्दीन, पप्पू और कल्लू हाथ में फर्सी व तलवार लेकर आए और फरियादी को घर के अंदर से बाहर निकालकर बोले कि रास्तें में पत्थर क्यों डाल रखे है, इस बात को लेकर नंगी-नंगी गालीं-गुप्ता दी। गालीं देने से मना करने पर आरोपीगण ने उसके साथ मारपीट की। फरियादी चिल्लाया तों विजय, धन्नजय, संजय आए तो आरोपीगण और उनके साथियों ने उनके साथ भी मारपीट की। सभी आरोपीगण ने एकमत होकर हमला किया तथा जान से खत्म करने की धमकी दी। घटना की रिपोर्ट फरियादी ने थाना शुजालपुर सिटी पर की थी। अनुसंधान के दौरान आरोपी को गिरफ्तार कर सक्षम न्यायालय में प्रस्तुत किया गया। जहां से जेल वारंट बनाकर उप जेल शुजालपुर भेजा गया।

कांग्रेस सौदा नहीं करेगी न ही निलामी होगी, सरकार बनेगी तो वोट से, नोट से नहीं

मैं बदनावर की जिम्मेदारी लेता हूं कि, बदनावर को मंत्री नहीं मुख्यमंत्री मिलेगा- कमलनाथ

माही की गूंज, बदनावर।

कांग्रेस प्रत्याशी कमलसिंह पटेल के सर्मथन में मंगलवार को कोटेश्वर में पूर्व सीएम कमलनाथ ने चुनावी सभा की। सभा में 15 हजार से अधिक मतदाताओं, कार्यकर्ताओं व मंडलम पदाधिकारियों एवं क्षेत्र के वरिष्ठ नेताओं सहीत बुथ लेवल के प्रभारियों ने पहुचकर सभा को ऐतिहासिक बना दिया। कार्यकर्ता व उमडे जन सैलाब से कांग्रेस की स्थिति काफी मजबूत दिखाई दी। सर्वप्रथम कमलनाथ ने कोद पहुंच कर सरदार पटेल की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया, जहां बडी संख्या में समाजजन व कार्यकर्ता मौजूद थे। तत्पश्चात उन्होने गुफा में पहुंच कर कोटेश्वर महादेव की पूजा अर्चना कर कमलसिंह पटेल की जीत की मनोकामना की। इसके बाद मंडल सेक्टर प्रभारी व बुथ प्रभारियों की बैठक ली, सभा स्थल पर पहुंचने पर कार्यकर्ताओं द्वारा गर्मजौशी से स्वागत किया गया।

कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए पूर्व सीएम कमलनाथ ने कहा कि, चुनाव प्रचार मे विरोधी कह रह है कि, चुनाव जीतने के बाद मंत्री मिलेगा। किंतु मै कांग्रेंस के एक-एक कार्यकर्ता व मतदाताओं से कहा कि मै, बदनावर की जिम्मेदारी लेता हुें कि बदनावर को मंत्री नहीं मुख्यमंत्री मिलेगा, मेरे लिए जैसा छिंदवाडा है वैसा ही बदनावर है। किसानों को लेकर कहा कि उनका जन्म कर्ज में होता है, उनकी मृत्यु भी कर्ज में ही होती है इसलिए हमने कर्ज माफी की थी। शिवराजसिंह चौहान को आढे हाथो लेते हुए कहा कि, शिवराजसिंह चौहान कहते है कि किसान उनका भगवान है, किंतु वास्तव में उनका भगवान तो माफिया है। 15 महिने में घर बैठने के दौरान ही शिवराज को सबक सीख जाना था, किंतु कभी मंच पर लेट जाएगे, तो कभी घुटने के बल बैठ जाएंगे, किसान के साथ अन्याय हुआ। शिवराज कहते है कि मै किसान का बेटा हुॅं, कहते है मै मामा हुॅं। किन्तु महिलाओं पर अत्याचार इन्ही के कार्यकाल मे अधिक हुए, आपका झुठ पकड लिया गया हैं। किसानो को मुआवजा मिले, सबसे बडी चिंता नोजवानो की है, ये नौजवन ही प्रदेश का भविष्य है, आज का नौजवान धोखे बाजो को सबक सिखाने का मौका हाथ से नही जाने देंगे, पहले जेब में

नारियल लेकर घुमते थे, अब चुनाव आ गया है तो जेब से नारियल निकाला ओर फोडने का काम करते है। माफिया को 15 साल तक संरक्षण दिया। किंतु कमलनाथ की सरकार आने पर कौनसी गलती कि, माफिया के विरुध अभियान चलाया। कौनसी गलती की, किसानों का कर्ज माफकिया। कौनसी गलती की कि, पिछडी जाती को 27 प्रतिशत तक का आरक्षण दिया। कमलनाथ ने अंत में कार्यकर्ताओं को कहा कि, आप सब यहां आए मेरा मान सम्मान बढाया, कांग्रेस कार्यकर्ताओं का जन सैलाब देखकर मेरा खून 250 ग्राम बढ गया है, कांग्रेस पार्टी कोई सौदा नहीं करेगी, न ही निलामी होगी। कांग्रेस की सरकार बनेगी तो वोट से, नोट से नही।

प्रत्याशी कमलसिंह पटेल ने कहा कि, यह चुनाव मैं नही, कांग्रेस का प्रत्येक कार्यकर्ता लड रहा है। साथ ही कहा कि, यह चुनाव राजा और सेवक के बीच का है, इस चुनाव में प्रत्येक कार्यकर्ता प्रत्याशी है, कांगेंस की जीत कार्यकर्ता की जीत होगी।

कार्यकर्ताओं में उर्जा भरने हेतु विधानसभा प्रभारी बाला बच्चन, पूर्व मंत्री हनी बघेल, कांतीलाल भूरिया, प्रताप गेवाल, हिरालाल अलावा, पाचीलाल मैडा व मंडलम अध्यक्ष कैलाश गुप्ता ने सबोधित किया। जय कांगेंस, विजय कांग्रेस के नारे कार्यकर्ताओं द्वारा लगाए गए। इस दौरान विधायक सैलाना हर्ष गेहलोत, बडनगर मुरली मोरवाल, जोबट कलावती भूरिया, अलिराजपुर मुकेश पटेल, पेटलवाद वालसिंह मेडा, थांदला वीरसिंह भूरिया एवं विक्रांत भूरिया, पारसदादा सकलेचा, मनोज गौतम, राधेश्याम मुवेल, कुलदीपसिंह बूंदेला, नरेन्द्रसिह बूंदेला, अभिषेक टल्ला मोदी, जीपीसिंह, हरिनारायणसिंह पंवार, सुनील सांखला, धुव्रनारायणसिंह, टिंकूबना, तेजकरण चावडा, दिनेश रघुवंशी, राजू खोकर, विष्णु मरगला, रविप्रतापसिंह, राजेश चौहान व प्रदेश महिला कार्यकारी अध्यक्ष यासमिन शैरानी, प्रदेश सचिव सारिका बाफना, प्रदेश संयोजक रैशमीसिंह, राधिका डामर, इस्मिता जागीरदार, विजेता द्विवेदी, शशी विश्वकर्मा सहीत कई पदाधिकारी मंचासीन थे। स्वागत भाषण जिलाध्यक्ष बालमुंकुदसिंह गौतम, सचालन निरंजनसिंह पंवार। आभार सुभद्रा तेजकरण चावडा ने माना।

ग्राम मालवई की मां चामुंडा माता का मंदिर बन चुका है भक्तो की आस्था का केंद्र

माही की गूंज, अलीराजपुर। संजय गेहलोद/इरसाद मंसूरी

अलीराजपुर जिले से 6 किलोमीटर दूर मालवई गांव में स्थित मां चामुंडा का मंदिर, जो अब पूरे इलाके में मालवई माता के मंदिर के रूप में जाना जाता है। मां चामुंडा का यह अति प्राचीन मंदिर, जो अलीराजपुर के इतिहास की धरोहर तो है ही, भक्तो की आस्था का केंद्र बिंदु भी है। कई सालों पुराने इस मंदिर में मां चामुंडा की प्राचीन मूर्ति है, जहां वर्षों से भक्त पूजा-अर्चना करते आ रहे हैं। जैसे-जैसे समय बीतता गया इस मंदिर के लिए भक्तों की आस्था भी बढ़ती चली गई, अब तो पूरे साल यहां भक्तों का जमावड़ा लगा रहता है।

इस मंदिर पर रोज सैकड़ों श्रद्धालु आते हैं, वहीं नवरात्र मे यहां हजारों की संख्या मे श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ पड़ती है। मालवाई माता का दरबार जहां पूरे साल भक्तों की मनोकामना पूर्ण होती है, लेकिन कहते हैं नवरात्रि में भक्तों को मां चामुंडा का विशेष आशीर्वाद मिलता है। कहा तो यह भी जाता है कि, माता के दरबार में सभी मनोकामना पुरी होती है यहा से अब तक कोई खाली हाथ नहीं लौटा है।

लोगों की आस्था का केंद्र बन चुके इस मंदिर में सैकड़ों किलोमीटर दूर से श्रद्धालु अपनी मन्नते लेकर आते हैं। अलीराजपुर और आस-पास के इलाकों में मालवई माता कर्ज देने वाली माता के नाम से भी प्रसिद्ध हैं। लोगों की माने तो मुसीबत में लोग मां से कर्ज के रूप में आर्थिक मदद भी मांगते हैं। व्यापारी वर्ग के लिए इस स्थान का बहुत महत्व है। कहा जाता है कि, मालवई माता से कर्ज लेकर शुरू किया गया व्यापार हमेशा फलता-फूलता है।

श्रद्धालुओ का मानना है कि, आर्थिक मुसीबतों में माता के दरबार में अगर कर्ज के लिए अर्जी लगाई जाए तो जल्द ही पैसों की व्यवस्था हो जाती है, यानि भक्तों को किसी भी रूप में आसानी से कर्ज मिल जाता है व यह कर्ज व्यापार में अच्छे मूनाफे के साथ जल्द उतर भी जाता है।

संपादकीय

साधुओं की हत्या एक साजिश या धार्मिक सोच पर हमले का प्रयास?

हमारे देश में यह क्या हो रहा है? कौन हैं ये हत्यारे, हमलावर और कौन संरक्षण दे रहा है? यह कैसा राज है? हालांकि पूरे देश को कलंकित करार देना न्यायसंगत नहीं है, लेकिन जो साधु-संतों की हत्याएं कर रहे हैं, जो दुर्दांत बलात्कारी हैं, जो महिला नेताओं पर भी हमलावर हैं और जिन्हें लंबे अंतराल तक कानून के कठघरे तक पहुंचाना संभव नहीं हो रहा है, क्या ऐसे मुखौटाधारी देश को कलंकित नहीं कर रहे हैं? राजस्थान के करौली गांव में एक अधेड़ पुजारी को जिंदा जलाकर मार दिया गया। इनसान इस हद तक भी पहुंच सकता है-बर्बर, क्रूर, पैशाचिक और मानवता-विरोधी! अभी तो करौली ही तपा हुआ है, लेकिन उप्र के गोंडा में एक महंत को गोली मार दी गई। फिलहाल वह अस्पताल में जीवन और मौत के बीच संघर्ष कर रहे हैं। कुछ पीछे लौटें, तो महाराष्ट्र के पालघर की दरिंदगी आप नहीं भूले होंगे।

भीड़ ने बुजुर्ग साधुओं को लाठियों, डंडों से पीट-पीट कर मार डाला। अभी तक कानून किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंच पाया है और न ही सीबीआई जांच के आदेश दिए गए हैं। ऐसी ही जघन्य घटना चित्रकूट में हुई थी, जहां 'बच्चा-चोर' आरोपित कर साधुओं की हत्या कर दी गई। महाराष्ट्र के ही नांदेड़ में लिंगायत समुदाय के साधुओं का कत्ल किया गया। उप्र के बुलंदशहर में दो साधुओं की हत्या की गई। बहरहाल ये ऐसे हादसे हैं, जो फिलहाल हमारी जानकारी में हैं। भारत जैसे विराट देश के हरेक कोने में कौन, किसे मार रहा है या जानलेवा हमले कर रहा है, उसका एक संगठित यथार्थ हमारे सामने नहीं है, लेकिन एक प्रवृत्ति स्पष्ट है कि मंदिर के पुजारियों, साधु-संतों और महंतों को निशाना बनाकर उन पर हमले किए जा रहे हैं। क्या देश के कुछ हिस्सों में जंगलराज, हत्याराज और अमानुषिक व्यवहार स्थापित हो चुके हैं? क्या ऐसे हमले हिंदू धर्म और सनातनी सोच पर किए जा रहे हैं?

क्या यह सब कुछ साजिशाना है? पुजारी और साधु-संत तो देव-स्वरूप होते हैं। वे तो दैवीय शक्तियों की प्रतिमूर्ति होते हैं। वे पूजा-पाठ करने वालों और धर्म के समर्थकों को पत्थर में भी भगवान का एहसास कराने की लगातार कोशिश करते रहे हैं, लिहाजा जब करौली के पुजारी अंतिम सांसें ले रहे थे, तो उन्होंने स्मरण किया-हे राम! हे भगवान!! हे मेरे मालिक!!! शायद उन्होंने इसे ही अपनी नियति मान लिया था! उन गरीब और अशक्त चेहरों के साथ किसी का क्या विवाद हो सकता है? लेकिन हत्या के लिए भी कोई बहाना तो चाहिए। ऐसे सवालों पर भाजपा कांग्रेस को और कांग्रेस भाजपा को कोसती रहे, एक-दूसरे के मुख्यमंत्रियों को गरियाते रहें, यह राजनीति तो हो सकती है, लेकिन हमारा जो सरोकार है, उस संदर्भ में ऐसी सियासत बेमानी है। यकीनन एक जिंदगी की कीमत 10 लाख या 25 लाख रुपए नहीं आंकी जा सकती।

ये तो मुआवजे हैं, सांत्वनाएं हैं, पीड़ित परिवार को दोबारा खड़ा होने में आश्रय मिलता है। सवाल हत्यारों और हमलावरों पर किए जाते रहेंगे कि आखिर हमारा समाज और देश 'आदिम और जंगली' क्यों बने रहेंगे? आखिर इनसानी जिंदगी की गारंटी कौन लेगा? यदि कोई भी सरकार 'अपराधहीन' समाज को सुनिश्चित नहीं कर सकती, तो कृपया 'रामराज्य' के दावे करना छोड़ दें। क्योंकि मौजूदा दौर में हिंदू धर्म और सनातनी सोच बेहद असुरक्षित हैं। बेशक ऐसे अपराधों में मुजरिम पकड़े जाते हैं और उन्हें कानूनी सजा भी सुनाई जाती है, लेकिन जेल से बाहर आकर वे फिर हत्याएं करते हैं। दरअसल यह मानसिक प्रवृत्ति का मामला है। वह कैसे समाप्त होगी, बुनियादी चिंता तो यह है। अभी तक कोई भी सरकार इन मामलों में सफल नहीं रही है, लिहाजा यह समझा जाए कि इन प्रवृत्तियों के साथ ही इनसान को जीना पड़ेगा?

स्त्री-शक्ति के नौ रूप नवजीवन के प्रतीक

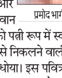

प्रमोद भार्गव

शारदेय नवरात्रों में एकबार फिर हम स्त्री शक्ति के नौ रूपों की पूजा कर रहे हैं। नवरात्र में जो नव उपसर्ग हैं, वे नौ की संख्या के साथ-साथ नूतनता के भी प्रतीक हैं। इस अर्थ में वे परिवर्तन के सूचक हैं। ये रूप-शक्ति, स्त्रीत्व और समृद्धि के प्रतीक भी हैं। इन स्वरूपों की पूजा करते हुए स्त्री रूपी इन देवियों के भव्य रूप हमारी चेतना में उपस्थित रहते हैं। इन्हें शक्ति रूप इसलिए कहा जाता है, क्योंकि जब सृष्टि के सृजन काल में देव पुरूष, दानवों से पराजित हुए, तो उन्हें राक्षसों पर विजय के लिए दुर्गा से अनुनय करना पड़ा। एक अकेली दुर्गा ने विभिन्न रूपों में अवतरित होकर अनेक रक्षसों का नाश कर सृष्टि के सृजन को व्यवस्थित रूप देकर गति प्रदान की। प्रतीक रूप में ये रूप अंततः मनुष्य की ही विभिन्न मनोदशाओं के परिष्कार से जुड़े हैं। इन मनोदशाओं को राक्षसी प्रवृत्ति कह सकते हैं, जो मनुष्य की नकारात्मक विकृतियों के भी प्रतीक हैं। इन रूपों के महत्व को जानते हैं।

नवदुर्गा में शैल पुत्री प्रथम दुर्गा मानी जाती हैं। इनके हाथों में त्रिशूल और कमल पुष्प सुशोभित हैं। इनका वाहन वृषभ है। शैल पुत्री अपने पूर्वजन्म में दक्ष प्रजापति की कन्या थीं और इनका नाम सती रखा गया। पिता की इच्छा के विरुद्ध सती ने भगवान शिव से विवाह किया। दक्ष ने एकबार महायज्ञ का आयोजन किया। किंतु इसमें शिव व सती को आमंत्रित नहीं किया। इसे सती ने शिव का अपमान माना और बिना बुलाए ही यज्ञस्थल पर पहुंच गईं। वहां उन्होंने अपने पिता को शिव को आमंत्रित करने के लिए बाध्य किया। किंतु प्रजापति ने शिव का उपहास उड़ाया और उन्हें बुलाने से इनकार कर दिया। तब सती ने क्रोधित होकर यज्ञ-कुंड में कूदकर अपने प्राणों की आहुति दे दी। शिव को जब सती के प्राण त्यागने का समाचार मिला तो उन्होंने अपने गणों को भेजकर यज्ञ का विध्वंस करा दिया। बाद में शिव सती के जले शव को कंधे पर लेकर भटकते रहे। पुराणों में उल्लेखित है कि इस दौरान सती के अंग बारह स्थानों पर गिरे, जिन्हें बारह ज्योतिर्लिंगों की मान्यता प्राप्त है। अगले जन्म में यही सती शैल राज हिमालय के घर में पैदा हुईं और शैलपुत्री कहलाईं। इन्हें ही पार्वती कहा जाता है।

दुर्गा का दूसरा रूप ब्रह्मचारिणी का है, श्वेत वस्त्रधारी ब्रह्मचारिणी के एक हाथ में जपमाला और दूसरे में कमण्डल है। ब्रह्मचारिणी का जन्म पर्वतराज हिमालय की पत्नी मैना के गर्भ से हुआ था। पहले इनका नाम शुभ लक्षणों को देखते हुए पार्वती रखा गया। बाद में नारद मुनि ने हिमालय को बताया कि यही पार्वती पूर्व जन्म में सती थीं। इस रहस्य को जानने के बाद पार्वती में शिव को प्राप्त करने की इच्छा जागृत हो गई। इसके लिए देवी ने कठिन तपस्या की। इससे उनका शरीर कृशकाया में बदल गया। तपस्या से तीनों लोकों में हाहाकार मच गया। तब ब्रह्मा ने उनके समक्ष उपस्थित होकर मनचाहा वर मांगने की प्रार्थना की। पार्वती ने शिव को मांगा। ब्रह्मा ने पार्वती को अशीर्वाद तो दिया ही, उनकी काया को भी सुंदर रूप में बदल दिया। यहीं ब्रह्मा ने तप का आचरण करने के कारण ब्रह्मचारिणी का नाम दिया।

नवरात्रों के तीसरे दिन दुर्गा के शरीर से नई शक्ति के रूप में चंद्रघंटा की वंदना की जाती है। सिंह पर सवार ये देवी निडरता के साथ सौम्यता के गुणों से भी भरपूर हैं। इनके आभामंडल से अदृश्य शक्ति का विकिरण होता रहता है। इनके शरीर का वर्ण स्वर्ण है। इनके दस हाथ हैं, जिनमें खड्ग, अस्त्र-शस्त्र, बाण आदि विभूषित हैं। देवासुर संग्राम में इनके घंटे की भयानक ध्वानि से सैंकड़ों दैत्य मारे गए थे। इनकी मुद्रा हमेशा युद्ध के लिए तत्पर दिखाई देती है।

दुर्गा का चौथा स्वरूप कूष्मांडा देवी का है। इनका निवास सूर्यलोक में है। इसीलिए इनके शरीर की कांति और आभा सूर्य के समान सदैव प्रकाशित रहती है। सृष्टि के संपूर्ण प्राणियों में इन्हीं देवी का आलोक प्रदीप्त है। जब ब्रह्माण्ड का अस्तित्व नहीं था और चारों और अंधेरा था, तब इन देवी ने अपनी मंदमुस्कान द्वारा अंड अर्थात ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति की। इसी कारण इन्हें कूष्मांडा कहा गया। सिंह पर सवार कूष्मांडा अष्ट भुजाधारी हैं। इनके हाथों में कमण्डल, धनुष-बाण, कमल-पुष्प, अमृत-कलश, चक्र गदा और सभी प्रकार की सिद्धियां व जपमाला सुशोभित हैं।

दुर्गा का पांचवां रूप स्कंदमाता का है। इनके पुत्र कार्तिकेय का एक नाम स्कंद है, इसलिए इन्हें स्कंदमाता कहा जाता है। सिंह पर सवार इन देवी की चार भुजाएं हैं। इनके दो हाथों में कमलपुष्प हैं एक हाथ वरदान की मुद्रा में है और दूसरा हाथ पुत्र स्कंद को गोद में लिए है। इस कारण ये पद्मासना देवी भी कहलाती हैं।

इनके बाद छठे दिन देवी कात्यायनी की पूजा की जाती है। कात्य नामक ऋषि की वंशावली में एक प्रसिद्ध ऋषि कात्यायन हुए हैं। ये दुर्गा के भक्त थे। इस भक्ति से प्रसन्न होकर दुर्गा ने कात्यायन को कोई वर मांगने को कहा। तब महर्षि ने दुर्गा से अपने घर में पुत्री के रूप में जन्म लेने का आग्रह किया। दुर्गा ने यही वरदान दे दिया। कुछ समय बाद जब पृथ्वी पर महिषासुर नाम के असुर का अत्याचार बढ़ गया, तब दुर्गा के तेज से कात्यायन की पत्नी की कोख से देवी कात्यायनी ने जन्म लिया। पुराणों में ऐसा कहा गया है कि इस तेज में ब्रह्मा, विष्णु और महेश के तेज का भी समावेश है। चार भुजाधारी कात्यायनी का वाहन सिंह है। इनकी चार भुजाओं को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का प्रतीक माना गया है।

दुर्गा के सांतवें रूप को देवी कालरात्रि के नाम से जाना जाता है। इनकी काया अमवस्या की गहरी काली रात की तरह काली है। इनके मस्तक पर तीन नेत्र विद्यमान हैं, जो ब्रह्मांड के समान गोल तथा तीन लोकों के प्रतीक हैं। इनके केस घने एवं बिखरे हुए हैं। इनके गले में विद्युत ज्वाला सी प्रकाशित माला पड़ी हुई है। सांस लेते समय इनके नासिका छिद्रों से अग्नि की लपटें निकलती रहती हैं। इनकी सवारी गधा है और ये चार भुजाओं वाली हैं। इनके दो हाथों में तलवार और नुकीला अस्त्र है। जबकि एक हाथ वरदान की मुद्रा में और दूसरा अभय की मुद्रा में है। इन देवी को राक्षस और भूत-प्रेत का विनाश करने वाली देवी माना जाता है।

दुर्गा पूजन के आठवें दिन महागौरी की उपासना की जाती है। महागौरी ने शिव को पति रूप में प्राप्त करने के लिए लंबे समय तक तपस्या की। इस समय उन्होंने धूप, आंधी, वर्षा और ठंड के थपेड़े सहे। इस कारण उनका शरीर कृशकाय और काला हो गया। अंत में जब भगवान शिव ने पार्वती रूपी इन महागौरी को पत्नी रूप में स्वीकार किया तब शिव ने अपनी जटाओं से निकलने वाली गंगा की जलधारा से पार्वती का शरीर धोया। इस पवित्र और शुद्ध गंगाजल से पार्वती का मैल धुल गया और उनका शरीर गौर वर्ण की तरह चमकने लगा। इसी कारण वे महागौरी के नाम से जानी जाने लगीं। इनका वाहन बैल है और इनकी मुद्रा अत्यंत शांत एवं सौम्य है।

नवरात्रि के अंतिम यानी नवें दिन सिद्धिदात्री की पूजा करने की परंपरा है। ये सभी रिद्धी-सिद्धियों की स्वामिनि हैं। पुराण कथाओं के अनुसार जब दुर्गा के मन में सृष्टि की रचना का विचार उत्पन्न हुआ, तब उन्होंने शिव को उत्पन्न किया। शिवजी ने उत्पन्न होने पर दुर्गा से सिद्धियों की मांग की। शिव को सिद्धियां प्रदान करने के लिए एक अंश से देवी सिद्धिदात्री का जन्म हुआ। जो सभी प्रकार की सिद्धियों की ज्ञाता थीं। बाद में सिद्धिदात्री ने शिव को 18 प्रकार की दुर्लभ, आमोघ और शक्तिशाली सिद्धियां दीं। इनसे ही शिव में अलौकिक शक्तियों का तेज उत्पन्न हुआ। इसके बाद शिव ने विष्णु की और विष्णु ने ब्रह्मा की उत्पत्ति की। ब्रह्मा को सृष्टि रचना का, विष्णु को सृष्टि पालन का और शिव को सृष्टि के संहार का दायित्व सुपुर्द किया।

ब्रह्माजी को जब नर एवं नारी के अभाव में सृष्टि की रचना असंभव लगने लगी, तब उन्होंने माता सिद्धिदात्री का स्मरण किया। तब सिद्धिदात्री ने प्रकट होकर सिद्धियों द्वारा शिव का आधा शरीर नारी का बना दिया। इस प्रकार शिव आधे नर और आधे नारी के रूप में अर्धनारीश्वर कहलाए। तब कहीं जाकर ब्रह्मा की सृष्टि सृजन संबंधी समस्या का समाधान हुआ। दुर्गा के इन स्त्री रूपों में नारी की इतनी महिमा होने के बावजूद हम हैं कि न केवल स्त्री के साथ दुराचार कर रहे हैं, बल्कि कोख में भी स्त्री-भ्रूण की हत्या करने का महापाप कर रहे हैं। सही मायने में नवरात्रि व्रत उपवास का संदेश स्त्री के संरक्षण से जुड़ा है।

महामारी से आई मंदी बनी मुसीबत

अब ये आम धारणा बन गई है कि साल 2020 लोगों की जिंदगी में नहीं आया। एक पूरे साल को जिंदगी से घटाकर देखने की मजबूरी इसलिए बनी है कि इस महामारी के कारण जो मुश्किलें खड़ी हुईं, वो दूर होने का नाम नहीं ले रही हैं। इसकी एक मिसाल दिल्ली के पटाखा व्यापारियों में छाया मायूसी का आलम है। लॉकडाउन और महामारी के कारण पटाखों की फैक्टरियां बंद रहीं, जिस वजह से इस बार अच्छे व्यापार की उम्मीद कम ही है। वैसे भी प्रदूषण व सामान्य पटाखों की बिक्री पर प्रतिबंध के चलते पटाखा व्यापार बीते कुछ सालों से ठीक नहीं रहा। दिवाली के अलावा शादी जैसे अन्य मौके पर भी लोग पटाखे जलाकर खुशियां मनाते हैं, हालांकि इस बार पटाखों की मांग ना के बराबर है। अब ग्रीन पटाखों की नई किस्में बनने लगी हैं। ग्रीन पटाखे सामान्य पटाखों के मुकाबले 30 फीसद तक प्रदूषण कम करते हैं। लेकिन ये सामान्य पटाखों की तुलना में थोड़े महंगे होते हैं। जब आर्थिक तबाही का आलम है, तो महंगे पटाखे आखिर कितने लोग चलाएंगे? इसीलिए पिछले साल ग्रीन पटाखे बेचने वाले दुकानदार इस बार हाथ पर हाथ धरे बैठे हैं। ग्रीन पटाखे सुप्रीम कोर्ट के निर्देश के मुताबिक और राष्ट्रीय पर्यावरण अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान, वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद तथा तेल एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय के पेट्रोलियम एवं विस्फोटक सुरक्षा संगठन के मानकों के अनुरूप बनाए जाते हैं। ये पटाखे तमिलनाडु के प्रसिद्ध शिवकाशी से लेकर हरियाणा, उत्तर प्रदेश, पंजाब, गुजरात, महाराष्ट्र और राजस्थान में बनते रहे हैं। लेकिन इस साल परेशानी यह है कि डिमांड बेदह कम है। व्यापारियों के मुताबिक इस बार 20 फीसदी डिमांड ही है और सप्लाई उससे भी कम है। बीते 5 साल में पटाखा व्यापार की स्थिति देखते हुए आधे पटाखा व्यापारी काम ही नहीं कर रहे हैं। वे कोई और काम कर रहे हैं या फिर बेरोजगार बैठे हैं। वैसे लोग अब ज्यादातर लोग सीजन के हिसाब से काम करते हैं- यानी होली के वक्त रंग बेचना, कभी पतंग बेचना, शादियों के वक्त शादियों का काम करना आदि। मगर इस साल कोविड-19 की वजह किसी काम में तेजी नहीं है। नतीजतन, हजारों लोगों के सामने जीवन-मरण का सवाल खड़ा है। इस व्यापार में सभी धर्म के लोग जुड़े हुए हैं। दुखद यह है कि तमाम आर्थिक चर्चाओं में इन तबकों की कोई बात नहीं होती।

मध्यप्रदेश उपचुनाव-नीचता की उच्चता

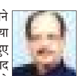

डॉ.अरविन्द प्रेमचंद जैन, लेखक

जब बच्चा गर्भस्थ होता हैं तब उसके ऊपर माँ बाप की सोच का प्रभाव पड़ता हैं, जन्म लेने के बाद उसके परिजन, परिवेश का प्रभाव पड़ता। स्कूल जाने पर अपने शिक्षकों का, और पढाई के बाद नौकरी, व्यवसाय का, धार्मिक क्षेत्रो में संत, गुरुओं का और राजनीति में कोई को आदर्श बनाते या मानते हैं। इस मतलब संस्कार जन्मजात मिलते या रहते हैं।

हम राजनीती की चर्चा करे तो इस समय जो मध्यावधि चुनाव हो रहे हैं, उसमे जीतने के लिए जितनी अधिक नीचता का प्रदर्शन हो रहा हैं वह अकथनीय हैं। यानी जिनको जनता अपना आदर्श मानती हैं उन्होंने अपने योग्यता, संस्कार का धज्जियाँ उड़ा दी। इसमें मुझे लगता हैं की शायद उनके माँ बाप को यह अहसास हो गया था की होने वाला बच्चा राजनीती में जायेगा। जन्म के बाद होनहार बिरवान के होत चीकने पात देखकर संभवतः जननी को समझ में आगया होगा इसके जन्म के समय कैसा बीजारोपण रहा होगा या भूमि की स्थिति कैसी रही होगी।

उर्वरा जमीन हो, पानी का सिंचन हो, मौसम अच्छा मिले, खाद अच्छा और समय पर डाला जाय पर बीज अच्छा न हो या अंकुरण न हो तो फसल की क्या गलती। इसी प्रकार वर्तमान में हमारे माननीय ध्माणमान्य ध्प्रतिष्ठित लोग जो फसल के रूप में बिखरे हैं उनमे उनकी गलती नहीं हैं वरन जमीन और बीज की होने की संभावना हो सकती हैं। आजकल इन नेताओं की खाल ध्चमड़ी इतनी मोटी हो चुकी हैं या दूसरे शब्दों में इतने बेशर्म ध्बेहया हो चुके हैं की इनको किसी भी बात पर बुरा नहीं लगता और बेलिहाज बोलने में नहीं चूकते। पता नहीं इस कुर्सी में इतना आकर्षण होता हैं, जबकि वह लकड़ी की बनी हैं और वह कुर्सी जूठी या दूसरे द्वारा त्यागी गयी हैं उसके लिए अपनी प्रतिष्ठा दांव पर लगा रखी। पता नहीं मुख्यमंत्री की कुर्सी पर कौन सा नंबर हैं

सब नेता उसी भूमि और बीज की फसल हैं जिन पर कोई भी प्रभाव नहीं पड़ता। इन दिनों जो शब्दों का प्रयोग कर रहे हैं उससे शब्दकोष की शोभा बढ़ रही हैं नए नए संज्ञा, विशेषण का उपयोग किया जा रहा हैं, भविष्य यदि मिला तो आने वाली पीढ़ी उनसे क्या ज्ञान लेगी। और वर्तमान में मतदाता इस भरम में हैं की नीच वृत्ति के नेता को जिताये। ताज्जुब इस बात पर हो रहा हैं की जिस कोष या पार्टी में जन्म लिया था उसे ही कोष रहे हैं। जब ये अपने अभिभावक या जन्मदाता के नहीं हुए तब किसके होंगे। बाद में इनके मुखारबिंद से चारित्र, ईमानदार नैतिकता की बातसुनते हैं तो लगता हैं जैसे कोई शूकर मल को कितने अच्छे से ग्रहण करता हैं।

नेता यानी जिसमे लूटने, खसोटने। झूठन खाने खाने की आदत होती हैं और इसके साथ उसमे पानी का गुण होता हैं जो सब में मिल जाता हैं। जो दिन के दो और रात में एक रहते हैं। जहाँ शबाव, कबाव और शराब की बात होती हैं वहां सब एक होते हैं। दूसरी मजेदार बात हैं सब एक दूसरे की कमजोरियों को जानते हैं इसलिए प्रतिरोध नहीं पाते हैं। दूसरा वे लंगोटिया यार होते हैं जहाँ सबने एक साथ लंगोट उतारी कभी कभी लगता हैं जैसे ये लोग नूरा कुश्ती लड़ रहे हो। अभी इतनी कसर बची हैं कोई किसी की अंतरंगता को उजागर नहीं कर रहा हैं। हाँ उनकी सम्पत्ति और पारिवारिक जीवन पर हमला करने से नहीं चूक रहे हैं।

हम स्वर्णिम भविष्य की ओर बढ़ रहे हैं और ऐसे अवसर हर छह माह में आये जिससे अंतरंग भड़ांस और विषवमन करने का मौका मिल सकेगा

इस उपचुनाव में सब विजयी हो यही कामना करूँगा।

भारत में दो क्रांतियां जरूरी

डॉ. वेद प्रताप वैदिक

भारत में दो क्रांतियों की तत्काल जरुरत है। इन दो क्रांतियों को करने के लिए सबसे पहले भारत को एक राष्ट्र बनाना होगा। भारत इस वक्त एक राष्ट्र नहीं है। वह ऊपर-ऊपर से एक राष्ट्र दिखता है लेकिन वास्तव में वह एक नहीं, दो राष्ट्र है। एक भारत है और दूसरा 'इंडिया' है। इन दो राष्ट्रों में भारत का बंटना 1947 के भारत-विभाजन से भी ज्यादा खतरनाक है। 1947 में भारत के दो टुकड़े करने के लिए हम गांधी और नेहरु को दोषी ठहराते हैं लेकिन भारत और इंडिया के विभाजन का दोषी कौन नहीं है?

दिल्ली में बनी अब तक की सभी सरकारें हैं, हमारी सभी पार्टियां हैं और सभी नेतागण हैं। कौनसी ऐसी प्रमुख पार्टी है, जो केंद्र या प्रदेशों में सत्तारुढ़ नहीं रही है लेकिन किसी ने भी आज तक शिक्षा और स्वास्थ्य में कोई बुनयादी परिवर्तन नहीं किया। सभी अपनी रेलें अंग्रेजों की बनाई पटरी पर चलाते रहे हैं। वर्तमान सरकार ने नई शिक्षा नीति बनाई है।

उसमें कुछ सराहनीय मुद्दे हैं लेकिन वे लागू कैसे होंगे ? हमारे बच्चे भारतीय भाषाओं के माध्यम से पढ़ेंगे लेकिन नौकरियां उन्हें अंग्रेजी के माध्यम से मिलेंगी। सिर्फ मजबूर लोग ही अपने बच्चों को बेकारी की खाई में ढकेलेंगे। जो अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में पढ़ेंगे, वे नौकरियों, रुतबे और माल-मत्ते पर कब्जा करेंगे।

ये 'इंडिया' के लोग होंगे। इनमें से जिसको भी मौका मिलेगा, वह विदेश भाग खड़ा होगा। जरुरी यह है कि सारे देश में शिक्षा की पद्धति एक समान हो। नैतिक शिक्षा, व्यायाम और ब्रह्मचर्य पर जोर दिया जाए। गैर-सरकारी स्कूलों-कालेजों को खत्म नहीं किया जाए लेकिन उनमें और सरकारी स्कूल-कालेजों में कोई फर्क न हो। न फीस का, न माध्यम का और न ही गुणवत्ता का! सरकारी नौकरियों में से अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त हो।

यही क्रांति स्वास्थ्य और चिकित्सा के क्षेत्र में जरुरी है। चिकित्सा के मामले में भारत बहुत पिछड़ा हुआ है। इंडिया बहुत आगे है। इंडिया के लोग 25-25 लाख रु. खर्च करके कोरोना का इलाज करवा रहे है। लेकिन ग्रामीण, गरीब, दलित, आदिवासी लोगों को मामूली दवाइयां भी नसीब नहीं हैं। तो क्या करें ? करें यह कि सभी गैर-सरकारी अस्पतालों पर कड़े कायदे लागू करें ताकि वे मरीजों से लूटपाट न कर सकें। कई नेताओं और अफसरों ने मुझसे पूछा कि गैर-सरकारी अस्पतालों और स्कूलों पर ये प्रतिबंध लगाए जाएंगे तो शिक्षा और चिकित्सा का स्तर क्या गिर नहीं जाएगा ?

वे सरकारी अस्पतालों और स्कूलों की तरह निम्नस्तरीय नहीं हो जाएंगे ? इसका बेहद असरदार इलाज मैं यह सुझाता हूं कि राष्ट्रपति से लेकर नीचे तक सभी कर्मचारियों और चुने हुए जन-प्रतिनिधियों के लिए यह अनिवार्य कर दिया जाए कि वे अपने बच्चों को सिर्फसरकारी स्कूलों में ही पढ़ाएं और अपने परिवार का इलाज सिर्फ सरकारी अस्पतालों में ही कराएं। देखें, रातोंरात भारत की शिक्षा और चिकित्सा में क्रांति होती है या नहीं?

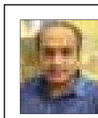

सिद्धार्थ शंकर

लापरवाही होगी घातक

कारोबारी गतिविधियों को लंबे समय तक रोक कर रखने का नतीजा अर्थव्यवस्था पर साफ नजर आने लगा है। इस दृष्टि से सिनेमाघरों और दूसरी गतिविधियों को भी खोलना जरूरी था। मगर कोरोना विषाणु का प्रकोप अभी समाप्त नहीं हुआ है। प्राथमिक जांच और संक्रमण रोकने संबंधी एहतियाती उपाय किए जा रहे हैं, पर अब तक के अनुभवों से यही जाहिर है कि बुखार नापने, हाथ की सफाई, मुंह ढंकने आदि जैसे उपाय संक्रमण रोकने में पूरी तरह मददगार साबित नहीं हो पाए हैं। इसलिए अनेक देशों में इस महामारी की लहर रह-रह कर उठती रही है। अभी हमारे यहां इसका खतरा कुछ अधिक बना हुआ है। पराली जलाने से वातावरण में धुएं की गाढ़ी परत जमा होने से संक्रमण फैलने की आशंका बढ़ गई है। सर्दी का मौसम शुरू हो रहा है और इस मौसम में हवा पृथ्वी की सतह के निकट संघनित होने लगती है। उस समय कोरोना का कहर बढने का खतरा रहेगा। जीवन की गतिविधियों को लंबे समय तक रोक कर नहीं रखा जा सकता, इसलिए कामकाज चलते रहने देना जरूरी है। हालांकि सरकारें लगातार हिदायत दे रही हैं कि लोग सावधानीपूर्वक घरों से बाहर निकलें और संक्रमण से बचने के लिए सभी जरूरी उपायों का पालन करें। मगर देखा जा रहा है कि जैसे ही बंदी हटनी शुरू हुई, लोग इस कदर मनमाने ढंग से घरों से बाहर निकलने लगे और बाजारों में भीड़भाड़ बढने लगी, जैसे कोरोना का भय पूरी तरह समाप्त हो गया हो।

शारीरिक दूरी बनाए रखने, मुंह ढंकने जैसे नियमों का पालन करना अब भी जरूरी है, पर लोगों को जैसे इसकी कोई परवाह नहीं रह गई है। सरकारी दफ्तरों आदि में जहां इन नियमों का पालन करना अनिवार्य है, वहां तो फिर भी लोग मुंह ढंके मिल जाएंगे, पर सामान्य बाजारों में इसका पालन करते कम ही लोग देखे जा रहे हैं। छोटे शहरों-कस्बों में चलने वाले सार्वजनिक वाहनों में सवारियां कोरोना काल से पहले की तरह ही ठूंस कर भरी जा रही हैं। लोग चाट-पकौड़े की दुकानों पर पहले की तरह भीड़ लगाए दिखने लगे हैं। यह सब देखते हुए चिंता बढना स्वाभाविक है।

किसी भी महामारी से तब तक नहीं निपटा जा सकता जब तक कि लोग खुद सावधानी बरतते हुए उससे बचने का प्रयास न करें। बहुत सारी संक्रामक बीमारियां लोगों की मनमानी से फैलती और महामारी का रूप ले लेती हैं। ऐसा भी संभव नहीं है कि प्रशासन हर वक्त लोगों पर नजर रखे और उन्हें मुंह ढंकने, शारीरिक दूरी बनाए रखने जैसे खुद पालन किए जा सकने वाले नियमों को लेकर सख्ती बरते और फाइन लगाए। हाल में स्वास्थ्य मंत्री को भी यह कहने को मजबूर होना पड़ा कि लोगों की लापरवाही से संक्रमण ज्यादा फैला। इसलिए अगर हमें कोरोना से बचना है तो मास्क और सुरक्षित दूरी जैसे उपायों को तो अपनाना ही होगा। देश में रोजाना जिस संख्या में कोरोना संक्रमण के मामले सामने आ रहे हैं, उससे यह तो स्पष्ट है कि महामारी का प्रसार अभी कमजोर नहीं पड़ा है। हालांकि पिछले एक हफ्ते के दौरान संक्रमण के मामलों में कमी तो आई है और स्वस्थ होने की दर भी बढ़ रही है, लेकिन चिंता की बात यह है कि महामारी के प्रति लोग अब लापरवाह होते जा रहे हैं और इससे बचाव के उपायों को नजरअंदाज कर रहे हैं। यह नहीं भूलना चाहिए कि जब तक इस महामारी से बचाव का कोई इलाज नहीं खोज लिया जाता, तब तक इससे बचाव के उपाय ही हमारी रक्षा कर सकते हैं। यह मान बैठना बड़ी भूल होगी कि संक्रमण का प्रसार अब खत्म हो चुका है, इसलिए अब खतरे की कोई बात नहीं है। चिकित्सा विशेषज्ञ ऐसी आशंका भी जता रहे हैं कि तमाम मामलों में अभी भी लक्षणों का उभर कर नहीं आना एक बड़ी चुनौती बना हुआ है और ऐसे संक्रमिक लोग भी विषाणु के वाहक बन रहे हो सकते हैं। बाजार और दूसरी गतिविधियां इसलिए शुरू की गई हैं ताकि लोगों को सुविधा हो सके और कारोबारी गतिविधियां भी चलती रहें। इसका मतलब यह नहीं कि इस तरह लोगों को मनमानी करने, अपने और दूसरे के जीवन को खतरे में डालने की छूट मिल गई है। जब तक कोरोना की भरोसेमंद दवा नहीं खोज ली जाती, तब तक इस महामारी का खतरा बना रहेगा। ऐसे में लोगों को खुद जिम्मेदार नागरिक की भूमिका निभानी होगी।

चाणक्य नीति

हाथी का शरीर कितना विशाल है लेकिन एक छोटे से अंकुश से नियंत्रित हो जाता है। एक दिया घने अन्धकार का नाश करता है, क्या अँधेरे से दिया बड़ा है। एक कड़कती हुई बिजली एक पहाड़ को तोड़ देती है, क्या बिजली पहाड़ जितनी विशाल है। जी नहीं, बिलकुल नहीं, वही बड़ा है जिसकी शक्ति छा जाती है। इससे कोई फरक नहीं पड़ता की आकार कितना है।

एक सलाह

सलाह एक ऐसी वस्तु है जिसे हम तो जानते है लेकिन खुद पर विश्वास न होतो यही सलाह दुसरो से सुनने की अपेक्षा रखते है।

काम की बात

असंभव समझे जाने वाला कार्य संभव करके दिखाएं, उसे ही प्रतिभा कहते है।

टीआरपी मुक्त खबरें क्यों नहीं?

आम दर्शक तो टीवी पर केवल सच्ची और साफ-सुथरी खबरें ही देखना चाहते हैं, किंतु टीआरपी की होड़ ने आज न्यूज चौनलों की पत्रकारिता को इतने निचले स्तर पर ला दिया है कि अब अधिकतर न्यूज चौनलों पर सही न्यूज की जगह फेक न्यूज और डिबेट के रूप में हो-हल्ला ही देखने-सुनने को मिलता है। सभी चौनल यह दावा करते हैं कि हम ही नंबर वन हैं। अभी हाल ही में देश के दो बड़े न्यूज चौनलों पर टीआरपी से छेड़छाड़ के आरोप लगे हैं। टीआरपी की इस होड़ ने न्यूज चौनलों की पत्रकारिता का स्तर इतना अधिक गिरा दिया है कि लोकतंत्र के चौथे स्तंभ यानी मीडिया से आम लोगों का भरोसा कम होता जा रहा है।

हर हफ्ते गुरुवार के दिन टीआरपी यानी टेलीविजन रेटिंग प्वाइंट जारी करने वाली संस्था बार्क (ब्रॉडकास्ट ऑडियंस रिसर्च काउंसिल) ने यह घोषणा कर दी है कि अगले 8 से 12 हफ्ते तक अलग-अलग न्यूज चौनलों के टीआरपी के आंकड़े जारी नहीं किए जाएंगे। इनमें हिंदी न्यूज चौनल, इंग्लिश न्यूज चौनल, बिजनेस न्यूज चौनल और क्षेत्रीय भाषाओं के सभी न्यूज चौनल शामिल हैं। बार्क का कहना है कि इस दौरान उनकी तकनीकी टीम टीआरपी मापने के मौजूदा मानदंडों की समीक्षा करेगी और जिन घरों में टीआरपी मापने वाले मीटर लगे हैं, वहां हो रही किसी भी प्रकार की धांधली और छेड़छाड़ को रोकने की कोशिश करेगी।

कुछ न्यूज चौनलों द्वारा किए गए कथित टीआरपी घोटाले के कारण दो से तीन महीनों के लिए टीआरपी को रोक दिया गया है। अब सवाल यह उठता है कि दो से तीन महीनों तक न्यूज चौनलों की टीआरपी की गतिविधियों को रोककर मीडिया को साफ-सुथरा करने की जो कोशिश की जा रही है, क्या वो सच में कामयाब होगी? जिस चौनल की टीआरपी जितनी ज्यादा होती है उसे उतने ही ज्यादा और महंगे विज्ञापन मिलते हैं। टेलीविजन के सभी चौनलों के मुकाबले न्यूज चौनलों की भागीदारी बहुत कम है, किंतु दर्शकों पर इनका प्रभाव सबसे ज्यादा होता है। देश के केवल 44 हजार घरों में ही टीआरपी मापने के मीटर लगे हैं, तो सवाल यह भी है कि केवल इतने घरों में लगे टीआरपी मापने के मीटर पूरे देश की टीआरपी कैसे सुनिश्चित कर सकते हैं? घोटाले के आरोपों के मुताबिक इन घरों में से कुछ घरों को कुछ रुपए देकर टीआरपी के आंकड़ों से छेड़छाड़ की गई है।

आजकल अधिकतर न्यूज चौनल डिबेट दिखाते हैं, क्योंकि डिबेट में टीवी का दर्शक उस न्यूज चौनल पर अपना ज्यादा समय खर्च करता है और जिससे उसकी टीआरपी बढ़ जाती है। आजकल ग्राउंड रिपोर्ट न्यूज चौनलों से धीरे-धीरे गायब ही होती जा रही है, क्योंकि अब कोई न्यूज चौनल ग्राउंड रिपोर्टिंग में मेहनत और पैसा खर्च करना नहीं चाहता और ना ही अपने रिपोर्टरों को बाहर भेजना चाहता है।

अब सवाल यह है कि टीआरपी मापने की जो व्यवस्था फिलहाल लागू है, वो क्या वास्तव में सही है? क्या यह व्यवस्था सच्ची और साफ-सुथरी खबरें दिखाने वाले न्यूज चौनलों के लिए उपयोगी है? जवाब है नहीं। यदि ये न्यूज चौनल डिबेट करना बंद कर दें, मनोरंजक खबरें देने की बजाय सच्ची और साफ-सुथरी खबरें दिखाना शुरू कर दें तो उनकी टीआरपी निश्चित ही बहुत नीचे आ जाएगी। जिससे विज्ञापनदाता उन चौनलों को विज्ञापन देना बंद कर देंगे और विज्ञापन न मिलने के कारण, उन चौनलों को अपने रिपोर्टरों को तनख्वाह देना भी मुश्किल हो जाएगा और इस कारण उन न्यूज चौनलों को फिर से डिबेट और सस्ती खबरों को दिखाने के लिए मजबूर होना पड़ेगा। डिबेट और सस्ती, मनोरंजक खबरें चौनल की टीआरपी को बढ़ा देंगे, जिससे आगे लोगों को यह भरोसा हो जाएगा कि यही मॉडल सही है।

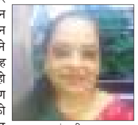

रंजना मिश्रा

न्यूज चौनलों के न्यूज रूम में बैठे प्रोग्राम एडिटर और पत्रकारों के दिमाग में न्यूज बनाते समय केवल एक ही बात ध्यान में रहती है कि कौन-सा प्रोग्राम और न्यूज ज्यादा टीआरपी लाएगा। अब आवश्यकता है कि टीआरपी की इस अंधी दौड़ को छोड़कर, न्यूज चौनलों का उद्देश्य, दर्शकों तक जरूरी खबरें और सूचनाएं पहुंचाना होना चाहिए, न कि मनमर्जी की खबरें दिखाना। यह खबरें रिसर्च और ग्राउंड रिपोर्टिंग पर आधारित होनी चाहिए, यही पत्रकारिता का सच्चा धर्म है।

(लेखिका स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।)

गौण होता रामलीलाओं का उद्देश्य

प्रतिवर्ष दशहरे से काफी समय पहले ही देशभर में रामलीलाओं के आयोजन की तैयारियां शुरू हो जाती हैं। रावण, कुम्भकर्ण व मेघनाद के 90-100 फुट तक ऊंचे पुतले तैयार होने लगते हैं। हालांकि इस वर्ष कोरोना महामारी का असर रामलीलाओं के वृहद् आयोजनों पर भी पड़ेगा।

योगेश कुमार गोयल

रामलीलाओं के आयोजन की शुरुआत कब हुई थी, दावे के साथ यह कह पाना तो मुश्किल है क्योंकि इस बारे में अलग-अलग मान्यताएं प्रचलित हैं किन्तु रामलीलाओं के आयोजन का उद्देश्य बिल्कुल स्पष्ट रहा है, कथा मंचन के माध्यम से मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के आदर्शों को जन-जन तक पहुंचाना। इस उद्देश्य में रामलीलाएं काफी हद तक सफल भी रही हैं। भक्ति और श्रद्धा के साथ मनाई जाती रही रामलीलाओं ने भारतीय संस्कृति एवं कला को जीवित बनाए रखने में अहम भूमिका निभाई।

श्रीराम के आदर्श, अनुकरणीय एवं आज्ञापालक चरित्र तथा सीता, लक्ष्मण, भरत, हनुमान, जटायु, विभीषण, शबरी इत्यादि रामलीला के विभिन्न पात्रों द्वारा जिस प्रकार अपार निष्ठा, भक्ति, प्रेम, त्याग एवं समर्पण के भावों को रामलीला के दौरान प्रकट किया जाता है, वह अपने आप में अनुपम है और नई पीढ़ी को धर्म एवं आदर्शों की प्रेरणा देने के साथ-साथ उसमें जागरुकता का संचार करने के लिए भी पर्याप्त है। यह आयोजन कला को भी एक नया आयाम प्रदान करते हैं। रामलीलाओं की सबसे बड़ी विशेषता यही रही है कि इनके मंचन में हिन्दुओं के साथ-साथ अन्य धर्मों के लोगों का भी विशेष सहयोग मिलता रहा है और रामलीला देखने के लिए भी सभी धर्मों के लोग आते हैं। रामलीलाओं में हमें भक्ति, श्रद्धा, आस्था, निष्ठा, कला, संस्कृति एवं अभिनय का अद्भुत सम्मिश्रण देखने को मिलता रहा है।

बहरहाल, ज्यों-ज्यों भारतीय संस्कृति पर आधुनिकता का रंग चढ़ने लगा है, रामलीलाएं भी आधुनिकता की चकाचौंध से दूर नहीं रह पाई हैं। रामलीला के नाम पर अब हर साल जिस तरह के आयोजन आजकल होने लगे हैं, उन्हें देखकर लगता है कि आधुनिकता की चपेट में आई इस प्राचीन परम्परा का मूल स्वरूप और धार्मिक अर्थ अब धीरे-धीरे गौण हो रहे हैं। एक-एक रामलीला के आयोजन में पंडाल और मंच की साज-सज्जा पर ही अब लाखों-करोड़ों रुपये खर्च होने लगे हैं। पंडालों की आकृतियां लाल किला, इंडिया गेट, ताजमहल जैसी भव्य ऐतिहासिक इमारतों के रूप में बनाई जाने लगी हैं। आधुनिक सूचना तकनीक ने रामलीलाओं में गहरी पैठ बना ली है। संवाद बोलने के लिए मंच पर लंबे-चौड़े माइकों की जरूरत नहीं पड़ती बल्कि कलाकारों के गले में छोटे-छोटे माइक्रोफोन लटके रहते हैं। इतना ही नहीं, कुछ रामलीला कमेटियां तो पंडालों में लंबी-चौड़ी वीडियो स्क्रीन लगाकर स्पेशल इफैक्ट्स दिखाने का बंदोबस्त भी करने लगी हैं। पंडालों के भीतर हर तरह के स्वादिष्ट व्यंजनों का लुत्फ उठाने के इंतजाम भी किए जाते हैं।

यदि रामलीलाओं के आयोजन में आधुनिक सूचना तकनीक का इस्तेमाल किया जाए तो इसे गलत नहीं ठहराया जा सकता लेकिन जिस तरह से रामलीला कमेटियों द्वारा आजकल ज्यादा से ज्यादा भीड़ जुटाने के लिए नए-नए प्रयोग किए जा रहे हैं और उनमें होड़ लगी रहती है कि किसके मंच पर ज्यादा चमक-दमक हो, किसका रावण सबसे बड़ा हो, कौन कितने बड़े-बड़े राजनेताओं को अपने आयोजन में बुलाने में सफल होता है,

इससे रामलीलाओं के मंचन का मूल उद्देश्य गौण होने लगा है। जाहिर है कि बहुत से आयोजकों द्वारा रामलीलाओं के आयोजन को पूर्ण रूप से व्यावसायिक बना दिया गया है और इन आयोजनों के जरिये उनका उद्देश्य राजनेताओं के साथ अपने सम्पर्क दायरे का विस्तार करना, अपना प्रभाव क्षेत्र बढ़ाना और आर्थिक लाभ कमाना ही हो गया है।

रामलीलाओं के दौरान लोगों को आकर्षित करने और उनका मनोरंजन करने के लिए जादू शो, चौरिटी शो, लक्की ड्रा तथा आकर्षक झांकियों के प्रयोग तक तो बात समझ में आती है लेकिन अगर ऐसे धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजनों में दर्शकों की ज्यादा से ज्यादा भीड़ एकत्रित कर ज्यादा से ज्यादा मुनाफा कमाने के नाम पर महंगी नृत्य पार्टियों और रास मंडलियों को बुलाकर रामलीला के दौरान उनके कार्यक्रम स्टेज पर आयोजित किए जाने लगें तो इसे क्या कहा जाएगा? रामलीलाओं के दौरान अब फिल्मी गीत-संगीत पर नाच-गाना एक आम बात हो गई है। हद तो यह है कि कुछ आयोजक रामलीलाओं के मंचन के दौरान कैबरे नृत्यों का भी सहारा लेने लगे हैं। आयोजक रामलीला के नाम पर इस तरह के भौंडे आयोजन कर चांदी कूट रहे हैं। हालत यह हो गई है कि फिल्मों व टीवी धारावाहिकों की ही तर्ज पर रामलीलाएं भी अब प्रायोजित की जाने लगी हैं और जाहिर है, ऐसे में मंच पर वही होगा, जो प्रायोजक चाहेंगे। मंच से रामलीला के कलाकारों द्वारा प्रायोजकों व आयोजकों का महिमामंडन भी परम्परा बनती जा रही है।

कुछ वर्ष पहले तक रामलीला कमेटियों का प्रमुख उद्देश्य श्रेष्ठ कलाकारों के जरिये रामकथा की जीवंत प्रस्तुति करना होता था और इसके लिए बाकायदा अयोध्या, फैजाबाद, लखनऊ इत्यादि विभिन्न स्थानों से अच्छे-अच्छे कलाकार बुलाए जाते थे लेकिन चूंकि आयोजक इन कलाकारों को पूरा पारिश्रमिक देने में अक्सर आनाकानी करते हैं, इसलिए ये कलाकार भी अब अपनी कला के प्रति इतने निष्ठावान नहीं रहे। काशी की चित्रकूट रामलीला का बहुत पुराना किस्सा प्रचलित है। बताया जाता है कि 1868 में मंचित की जा रही उस रामलीला में पं. गंगाधर भट्ट नामक एक कलाकार हनुमान का किरदार निभा रहा था। उस समय दर्शकों में एक अंग्रेज पादरी मैकफर्सन भी शामिल था। सीता की खोज के लिए हनुमान द्वारा समुद्र लांघने का दृश्य चल रहा था, तभी मैकफर्सन ने व्यंग्य कसा कि अगर रामायण में हनुमान 400 कोस का समुद्र लांघ गए थे तो रामलीला का यह हनुमान क्या वरुणा नदी के इस 27 हाथ चौड़े पाट को भी नहीं लांघ सकता? गंगाधर भट्ट से यह सब सुनकर रहा न गया। उसने अचानक मन में कुछ निश्चय कर 'जय श्री राम' का उद्घोष करते हुए छलांग लगा दी और 27 हाथ चौड़े पाट को लांघने में तो सफल हुआ किन्तु चोट इतनी लगी कि उसे बचाया नहीं जा सका। बताते हैं कि उस घटना के बाद मैकफर्सन उसकी निष्ठा और भक्ति के आगे नतमस्तक हो गया था।

हालांकि रामलीलाओं के अधिकांश आयोजकों का मानना है कि चूंकि आज मनोरंजन के बहुत सारे साधन हो गए हैं इसलिए जबतक रामलीलाओं के आयोजन एवं मंचन में कुछ खास न हो, तबतक रामलीलाएं दर्शकों को खींचने में सफल नहीं हो सकती। माना कि यह बात कुछ हद तक सही भी है और रामलीला मंचन में आधुनिक तकनीक के इस्तेमाल को भी उचित माना जा सकता है किन्तु इस तरह की दलीलों से लोगों की श्रद्धा एवं भक्ति से जुड़े इस तरह के आयोजनों में भौंडेपन के समावेश को हरगिज उचित नहीं ठहराया जा सकता।

(लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं।)

जरूरतमंदों को ज्ञान दान देने के यज्ञ में जुटे गुरू

शिक्षा देने वाले शिक्षक तो देश में लाखों की संख्या में हैं लेकिन कुछ ऐसे विरले शिक्षक भी हैं, जो अपनी अनोखी शिक्षण शैली के कारण देश-दुनिया में प्रसिद्ध हैं। हम जिन शिक्षकों के बारे में आपको बताने जा रहे हैं, वे बहुत अलग और अनोखे हैं।

सोनम वांगचुक

आपने श3 इडियट्सश् फिल्म में आमिर खान को जिस शख्सियत का किरदार निभाते देखा था, वास्तव में वे हैं लद्दाख के शिक्षाविद् सोनम वांगचुक। बीते तीन दशकों से शिक्षा की अलख जगाए रखने वाले शिक्षक और मैकेनिकल इंजीनियर वांगचुक उन चंद भारतीय लोगों में से हैं, जिन्हें उनके अनोखे प्रयास के लिए रेमन मैग्सेसे पुरस्कार मिल चुका है। उन्होंने सरकार, समाज और अन्य संस्थाओं के साथ मिलकर शिक्षा को व्यावहारिक और उपयोगी बनाने के अनूठे प्रयास किए हैं। लद्दाख जैसे शिक्षा के मामले में पिछड़े इलाके के छात्रों में शिक्षा के प्रति जो जागरुकता आई है, उसका श्रेय इन्हीं को जाता है। फेल होने वाले छात्रों की शिक्षा के लिए भी इन्होंने वैकल्पिक व्यवस्था की है, जो उन्हें लगातार आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है।

सुगत मित्रा

2013 में टीइडी (टेक्नोलॉजी, एंटरटेनमेंट, डिजाइन) अवार्ड से सम्मानित हो चुके, कोलकाता से ताल्लुक रखने वाले सुगत मित्रा के श्स्कूल इन द क्लाउडश् का कॉन्सेप्ट यह है कि बच्चे ही एक-दूसरे को पढ़ाएं। पेशे से एजुकेशनल रिसर्चर सुगत मित्रा का मानना है कि बच्चों में खुद पढ़ने और दूसरों को पढ़ाने की अद्भुत क्षमता होती है। उनका यह भी मानना है कि अगर हम अपने बच्चों को कंप्यूटर की पर्याप्त सुविधा दें तो वे काफी कुछ खुद ही सीख सकते हैं। उन्हें मिनिमम गाइडेंस के साथ कंप्यूटर की शिक्षा मोटिवेशन और एंटरटेनमेंट के माध्यम से दे सकते हैं।

गगन दीप सिंह

राजस्थान के जैसलमेर के रहने वाले गगनदीप सिंह ने अबतक दर्जनों दृष्टिहीन बच्चों की जिंदगी में शिक्षा के दीप जलाकर उनकी जिंदगी रोशन की है। इन्होंने हर बच्चे की समस्या के अनुसार अलग शैक्षिक प्रोग्राम बनाया और उसे पढ़ाया। बच्चों के साथ-साथ इन्होंने उनके परिवारों की भी काउंसलिंग की ताकि वे अपने बच्चे को फुल सपोर्ट दे सकें। गगनदीप सिंह ने नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफद विजुअली इंपेयर्ड में प्रशिक्षण लिया है। ये बच्चों को ब्रेलर्स जैसे इक्विपमेंट का उपयोग भी सिखाते हैं।

बाबर अली

पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद जिले के एक छोटे से गांव में रहने वाले बाबर अली ने उस उम्र से शिक्षक की भूमिका निभानी शुरू कर दी, जिस उम्र में लोग खुद पढ़ना सीखते हैं। जी हां! बाबर अली 9 वर्ष की उम्र से लोगों को पढ़ा रहे हैं। आज 23 साल के हो चुके बाबर अली किसी तरह से बनाए अपने स्कूल में 300 से ज्यादा गरीब बच्चों को पढ़ा रहे हैं। इस काम के लिए उन्होंने 6 शिक्षकों को भी रखा है।

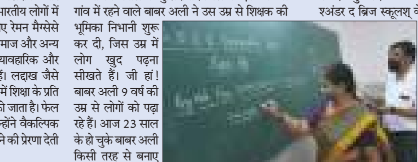

आदित्य कुमार

श्साइकिल गुरुजीश् के नाम से मशहूर साइंस ग्रेजुएट आदित्य कुमार शिक्षा के सच्चे वाहक और प्रसारक हैं। ये शिक्षा को उन जगहों तक पहुंचाते हैं, जहां तक स्कूलों की पहुंच नहीं। आदित्य हर रोज अपनी साइकिल पर सवार होकर 60-65 किलोमीटर सफर करके लखनऊ के आसपास के इलाकों में झुग्गी-झोपड़ी में रहने वाले गरीब बच्चों को पढ़ाते हैं। स्वयं गरीब परिवार में जन्मे आदित्य 1995 से यह अनोखा कार्य कर रहे हैं। आदित्य अपने साथ साइकिल पर ही एक बोर्ड लेकर घूमते हैं। जहां उन्हें कुछ छात्र मिलकर रोक लेते हैं, वे वहीं बैठकर पढ़ाने लगते हैं।

अरविंद गुप्ता

खेल-खेल में बच्चों को विज्ञान जैसे गूढ़ विषय का ज्ञान देना कोई अरविंद से सीखे। ये बच्चों को खिलौने बनाने की प्रक्रिया के माध्यम से विज्ञान के पाठ पढ़ा देते हैं। खिलौने भी बाजार से खरीदे मैटीरियल से नहीं बनवाते बल्कि कबाड़ से बनवाते हैं। खिलौने बनाने के एक-एक चरण के माध्यम से वे विज्ञान की कोई नई बात सिखा देते हैं। ये अपनी फन टीचिंग टेकनीक के वीडियो यू-ट्यूब पर भी अपलोड करते हैं।

राजेश कुमार शर्मा

श्अंडर द ब्रिज स्कूलश् के संस्थापक राजेश कुमार शर्मा दिल्ली के एक मेट्रो ब्रिज के नीचे लगभग 200 बच्चों का स्कूल लगाते हैं। उनके छात्र आसपास की बस्तियों में रहने वाले बच्चे हैं, जिन्हें अपनी गरीबी के कारण कभी स्कूल जाने का सौभाग्य नहीं मिला। इनके स्कूल में भले ही कोई इमारत, कुर्सी या अन्य सुविधाएं न हों लेकिन बच्चों को शिक्षा अच्छी तरह दी जाती है। यह स्कूल इन्होंने 2005 से शुरू किया। कभी-कभी यहां कुछ चर्चित शख्सियतों को भी बुलाया जाता है। दिलचस्प बात यह है कि राजेश कुमार पेशे से कभी शिक्षक नहीं रहे।

आनंद कुमार

बिहार के पटना जिले के रहने वाले शिक्षक आनंद कुमार न सिर्फ भारत बल्कि पूरी दुनिया के इंजीनियरिंग स्टूडेंट्स के बीच एक चर्चित नाम हैं। इनका श्सुपर 30श् प्रोग्राम विश्व प्रसिद्ध है। इसके तहत वे आईआईटी-जेईई के लिए ऐसे तीस मेहनती छात्रों को चुनते हैं, जो बेहद गरीब हों। 2018 तक उनके पढ़ाए 480 छात्रों में से 422 अबतक आईआईटीयन बन चुके हैं। आनंद कुमार की लोकप्रियता का अंदाजा आप इसी बात से लगा सकते हैं कि डिस्कवरी चौनल भी उनपर डॉक्यूमेंट्री बना चुका है। उन्हें विश्व प्रसिद्ध मेसाच्युसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी और हार्वर्ड युनिवर्सिटी से भी व्याख्यान का न्योता मिल चुका है।

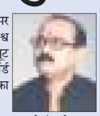

मुरलीमनोहर श्रीवास्तव

आरके श्रीवास्तव

बिहार के रोहतास जिले के रहने वाले आरके श्रीवास्तव देश में मैथेमैटिक्स गुरु के नाम से मशहूर हैं। चुटकुले सुनाकर खेल-खेल में जादुई तरीके से गणित पढ़ाने का उनका तरीका लाजवाब है । कबाड़ की जुगाड़ से प्रैटिकल कर गणित सिखाते हैं। सिर्फ1 रुपया गुरु दक्षिणा लेकर स्टूडेंट्स को पढ़ाते हैं, आर्थिक रूप से सैकड़ों गरीब स्टूडेंट्स को आईआईटी, एनआईटी, बीसीईसीई सहित देश के प्रतिष्ठित संस्थानों मे पहुँचाकर उनके सपने को पंख लगा चुके हैं। वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्डस और इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड में भी आरके श्रीवास्तव का नाम दर्ज है। राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद भी आर के श्रीवास्तव के शैक्षणिक कार्य शैली की प्रशंसा कर चुके हैं। इनके द्वारा चलाया जा रहा नाइट क्लासेज अभियान अद्भुत, अकल्पनीय है । स्टूडेंट्स को सेल्फ स्टडी के प्रति जागरूक करने लिये 250 क्लास से अधिक बार पूरी रात लगातार 12 घंटे गणित पढ़ा चुके हैं। विश्व प्रसिद्ध गूगल ब्वॉय कौटिल्य के गुरु के रूप में भी देश इन्हें जानता है।

रोशनी मुखर्जी

बैंगलुरु से ताल्लुक रखने वाली डिजिटल टीचर रोशनी मुखर्जी न तो कहीं पढ़ाने जाती हैं, न उन्होंने कोई स्कूल खोल रखा है। इसके बावजूद वे हजारों स्टूडेंट्स की फेवरेट टीचर हैं। असल में रोशनी ने अपना ऑनलाइन एजुकेशन प्लेटफॉर्म बना रखा है, जिसका लाभ हजारों विद्यार्थी उठा रहे हैं। ये अपने वीडियो यू-ट्यूब पर अपलोड करती हैं, जिनकी मदद से स्टूडेंट्स पढ़ाई करते हैं। उन्हें अपने विद्यार्थियों से लगातार फीडबैक भी मिलता है।

कश्मीर में खुराफात करने वालों बाज आओ

आरके सिन्हा

जम्मू-कश्मीर के नजरबंद नेताओं ने रिहा होते ही फिर पुरानी खुराफात चालू कर दी है। राज्य के पूर्व मुख्यमंत्रियों फारुख अब्दुल्ला, महबूबा मुफ्ती, उमर अब्दुल्ला और जम्मू-कश्मीर पीपुल्स कॉन्फ्रेंस, माकपा तथा जम्मू-कश्मीर अवामी नेशनल कॉन्फ्रेंस के नेताओं ने हाल ही में यह मांग कर दी कि भारत सरकार राज्य के लोगों को वो सारे अधिकार फिर से वापस लौटाए जो पाँच अगस्त 2019 से पहले उनको हासिल थे।

मतलब यह कि वे चाहते हैं कि संविधान के अनुच्छेद 370 की पुनः बहाली हो जो संसद के दोनों सदनों ने रद्द कर दिया है, ताकि ये मौज कर सकें। ये तो भारत के कट्टर शत्रु चीन और पाकिस्तान की भाषा बोल रहे हैं। दोनों देश भी यही चाहते हैं कि भारत जम्मू-कश्मीर के विशेष दर्जे की पुनः बहाली करे। इन नेताओं की बैठक में प्रस्ताव भी पारित किया गया, जिसे गुपकार घोषणापत्र नाम दिया गया था। हालांकि इन नेताओं की मांग ख्वाबों में भी पूरी होती नहीं दिख रही। जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 को हटाने के हक में संसद और सरकार के साथ सारा देश खड़ा था। आखिर पता तो चले कि अनुच्छेद 370 में क्या बात है जिसकी मांग कश्मीरी नेता कर रहे हैं? क्या यह सच नहीं है कि अनुच्छेद 370 कश्मीर और भारत को एक-दूसरे से पूरी तरह नहीं जोड़ती था? गृहमंत्री अमित शाह ने सही कहा था कि अनुच्छेद 370 ने भारत और दुनिया के मन में यह गलत और भ्रामक शंका पैदा कर दी थी कि कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है या नहीं? सारा देश जानता है कि बिना अपनी कैबिनेट को विश्वास में लिए आकाशवाणी के माध्यम से कश्मीर मुद्दे को संयुक्त राष्ट्र ले जाने की विवादास्पद घोषणा पंडित जवाहर लाल नेहरू ने की थी।

किधर हैं हुर्रियत कांफ्रेंस के नेता

पाकिस्तान से चंदा मांगने वाले अब यह मांग कर रहे कि कश्मीर में पुरानी व्यवस्था फिर बहाल हो। अब किधर हैं हुर्रियत कांफ्रेंस के नेता? वे तो दिन-रात पाकिस्तान का ही गुणगान किया करते थे। सारा देश भलीभांति जानता है कि अनुच्छेद 370 के कारण ही कश्मीर में अलगाववाद बढ़ा था। क्या अब्दुल्ला या महबूबा मुफ्ती ने कभी राज्य के अल्पसंख्यकों के हक भी बोला? क्या वहां हिंदू, जैन, बौद्ध और सिख नहीं रहते? अनुच्छेद 370 से राज्य के अल्पसंख्यकों के साथ घोर अन्याय हो रहा था। राज्य में 1989 से लेकर 2019 तक हजारों लोग बिना वजह मारे गए। अब जब वहां हालात सामान्य हो चुके हैं तो फिर देश क्या उसी पुराने रास्ते पर चले जिसपर वह पिछले 70 सालों से गलत ढंग से चल रहा था?

क्यों कश्मीर के नेता या उनके लिए आंखें नम करने वाले हिमायती यह नहीं बताते कि अनुच्छेद 370 किस तरह कश्मीर का कल्याण कर रहा था? यह विकास, महिला, गरीब विरोधी और आतंकवाद को बढ़ावा देने वाला था और वहां के मुठ्ठी भर परिवारों को भ्रष्टाचार की खुली छूट दे रखी थी जो पूरी तरह बंद हो जाने से वहां के इन भ्रष्ट नेताओं में बेचौनी फैली हुई है। जिस अनुच्छेद 370 की बहाली की मांग हो रही है, उसकी वजह से राज्य में बाल विवाह कानून लागू नहीं कर सकते थे? क्या कश्मीरी नेता फिर से यही चाहते हैं? इसी के चलते वहां कभी अल्पसंख्यक आयोग नहीं बना। वहां हिन्दू, जैन, सिख और बौद्ध अल्पसंख्यकों के रूप रहते हैं। हालांकि शिक्षा का अधिकार देश की संसद ने सबको दिया पर जम्मू-कश्मीर के बच्चों को यह अधिकार नहीं था क्योंकि वहां अनुच्छेद 370 लागू था। कश्मीर में अब खारिज कर दिए गए ये नेता यह क्यों नहीं बताते कि राज्य में आरटीआई एक्ट लागू क्यों नहीं हो पाया? इसी धारा 370 के कारण न? ऐसे अनेकों उदहारण हैं जिससे कश्मीर में घोर असमानता, अन्याय, अत्याचार और खुले भ्रष्टाचार को छूट मिली हुई थी।

शांति की बहाली

बहरहाल, कश्मीरी नेताओं की बैठक में कांग्रेस का कोई नुमाइंदा नहीं था। यह अच्छी बात कही जा सकती है। तो क्या माना जाए कि कांग्रेस ने भी अब महसूस करना चालू कर दिया है कि उसका अबतक राज्य में धारा 370 को समर्थन करना गलत था? हालांकि कांग्रेस के नेता तो यह भविष्यवाणी कर रहे थे कि इसके निरस्त करने के बाद खूनखराबे की स्थिति बन जाएगी। जबकि इसके हटने के बाद वहां अभूतपूर्व शांति की बहाली हो गई। कोरोना काल से पहले वहां स्कूल भी खुल गए थे। उनमें परीक्षाएं हो रही थीं। श्रीनगर में अस्पताल खुल गए थे।

दरअसल अब कश्मीरी नेताओं को जमीनी हकीकत समझने और व्यवहारिक होने की जरूरत है। उन्हें जमीनी हकीकत अब समझ आ जानी चाहिए। उनकी बकवास सुनने वाला कोई नहीं है। वे चाहें तो करके देख लें आंदोलन। उन्हें समझ आ जाएगा कि वे राज्य की जनता का विश्वास पूरी तरह खो चुके हैं। उनसे सारा देश सवाल पूछ रहा है कि वे चीन और पाकिस्तान की भाषा क्यों बोल रहे हैं?

चीन कह रहा है कि जम्मू- कश्मीर से विशेष राज्य का दर्जा खत्म करना अवैध और अमान्य है। वह भारत के आंतरिक मामले में दखल देकर अपनी औकात के बाहर चला गया। चीन ने पिछले साल भारत सरकार की तरफसे धारा 370 को हटाने के कदम को श्अस्वीकार्यश् करार दिया था। उधर, कश्मीर पर भारत सरकार के कदमों से पाकिस्तान की नींद उड़ी ही हुई है। भारत द्वारा लिए गए फैसले के बाद पाकिस्तान में जबर्दस्त खलबली मच गई। पाकिस्तान के राष्ट्रपति आरिफअल्वी ने संसद का संयुक्त सत्र बुलाया।

संयुक्त सत्र में पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान ने भारत सरकार के फैसले को आरएसएस के एजेंडे को आगे बढ़ाने वाला कदम बताया। दिमाग से सनकी हो गए इमरान खान ने भारत के मुसलमानों को भड़काने और उकसाने वाली पूरी बकवास की। वे तब से बार-बार कह रहे हैं कि भारत में मुसलमानों को दोयम दर्जे का नागरिक माना जाता है। इस तरह की बयानबाजी करके इमरान खान यही साबित करते रहे कि वे घनघोर भारत विरोधी हैं और वे यही चाहते हैं कि पाकिस्तान में जो वे हिन्दुओं, सिखों और ईसाइयों के साथ अन्याय कर रहे हैं, वही भारत मुसलमानों के साथ यहाँ करे। वे भारत के मुसलमानों को भड़काने की कोशिश कर आहे हैं, जिसमें वे कभी सफल न होंगे।

तो इस आलोक में ये क्यों न कहा जाए कि कश्मीरी नेता भारत के दुश्मनों के हाथों में खेल रहे हैं। जब चीन और पाकिस्तान भारत को जंग की धमकी दे रहे हैं तब कश्मीरी नेता वही अनाप-शनाप मांगे रख रहे हैं जो कभी पूरी नहीं होने वाली। इन्हें समझ आ जाना चाहिए कि जम्मू-कश्मीर की तरह भारत की एक-एक इंच भूमि पवित्र और खास है। कोई जगह कम या अधिक विशेष नहीं है। देशहित और कश्मीरी नेताओं के हित में यही होगा कि अब वे राज्य के विकास में सरकार का साथ दें और जनता का विश्वास पुनः प्राप्त करने की कोशिश करें। वे राज्य के उप-राज्यपाल मनोज सिन्हा से मिलकर काम करें। मनोज सिन्हा बेहद समझदार नेता हैं। वे सबको साथ लेकर चलने में यकीन भी करते हैं। लेकिन, चिंता यह है कि यदि राज्य का विकास हो जायेगा तो इन्हें पूछेगा कौन? **(लेखक वरिष्ठ संपादक, स्तंभकार और पूर्व सांसद हैं।)**

न्यूज ब्रीफ

पावागढ दर्शन के लिए जा रही जीप और बाइक के बीच हुई टक्कर, एक की मौत

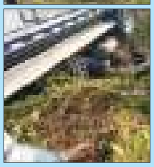

माही की गूंज, पेटलावद (झाबुआ)। बुधवार करीब 12 बजे के लगभग थांदला-बदनावर मार्ग पर कोदली फंटे के पास तूफान जीप ओर बाइक की भिड़ंत हो गई, बताया जा रहा है, बाइक पर सवार तीन में एक की मौके पर ही मौत हो गई जब कि दो बुरी तरह घायल है। दुर्घटना के बाद ईगल दीप कम्पनी के कर्मचारियों ने एम्बुलेंस भेजी व मोके पर पुलिस ने पहुँच कर घायलों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुँचाया।

थाना प्रभारी संजय रावत ने बताया कि, कोदली की और से आ रही बाइक की टक्कर पावागढ़ जा रही तूफान जीप से भिड़ गई, मृतक की पहचान भेरू पिता मानसिंह भाभर निवासी जमुनिया का बताया जा रहा है ओर घायल रमेश पिता कोदरिया डामर निवासी मोरझरिया को गम्भीर हालत में रेफर किया गया है। जबकि तारसिंह निवासी धनपुरा का इलाज पेटलावद शासकीय अस्पताल में किया जा रहा है, दुर्घटना के बाद जीप भी रोड से उतर गई और जीप में बैठी सवारी को भी मामुली चोटे लगी है।

जान देने जा रहे प्रेमी युगल को पुलिस ने बचाया

माही की गूंज, रतलाम। रतलाम जिले के कालूखेड़ा पुलिस ने एक प्रेमी युगल जोड़े की जान बचाई है, जिले के थाना कालूखेड़ा के अंतर्गत ग्राम जड़वासा के भगतराम भील ने थाने पर जाकर सूचना दी की मेरी लड़की बिना बताए कहीं चली गई है। सूचना पर तुरंत कार्रवाई करते हुए कालूखेड़ा थाना प्रभारी मधु राठौर के निर्देश पर उपनिरीक्षक पंकज राजपूत, प्रहलाद सिंह राणावत, प्रधान आरक्षक महेश चंद्र मिश्रा, आरक्षण राजेश पटेल रवाना होकर साइबर सेल से संदिग्ध की लोकेशन मांगी, जिसमें साइबर सेल रतलाम के आरक्षक विपुल भावसार ने संदिग्ध की लोकेशन भेजी जिस पर कार्रवाई करते ग्राम मामटखेड़ा में संदिग्ध के घर जाकर पुलिस ने देखा तो लड़की और उसके प्रेमी ने जहर पी लिया था, जिसपर पुलिस द्वारा सूझबूझ दिखातें दोनों युगल जोड़ो को लेकर सिविल हॉस्पिटल जावरा पहुंचे, जहां दोनों का उपचार चालू करवाया गया। वही युगल प्रेमी अभी खतरे से बाहर है। थाना प्रभारी ने बताया कि, दोनों की सगाई हो गई थी पर घर वाले अभी शादी कराने के लिए राजी नही थे, जिस कारण यह कदम उठाया दोनो फिलहाल दोनो स्वस्थ्य है।

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री ने जानी कोरोना में जिले की स्थिति

माही की गूंज, खरगोन। कोरोना संक्रमण में म.प्र. की वर्तमान स्थिति और अनुकूल व्यवहार अभियान को लेकर केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री डॉ. हर्षवर्धन ने म.प्र. के जिला कलेक्टरों के साथ वीसी के माध्यम से समीक्षा की। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री डॉ. हर्षवर्धन ने गत दिनों से कोरोना संक्रमण में आई कमी को लेकर इंदौर, उज्जैन, भोपाल, ग्वालियर और जबलपुर द्वारा किए गए प्रयासों तथा वर्तमान समय में किए जा रहे कार्यों के बारे में सीधे कलेक्टरों से चर्चा की। इसी तरह जिले की समीक्षा के दौरान कलेक्टर श्रीमती अनुग्रहा पी ने बताया कि, सितंबर माह में कोरोना का संक्रमण पीक पर था, लेकिन पिछ्ले दो हफ्तों से पॉजिटिविटी की दर कम हुई हैं। जिले का डिस्चार्ज रेट 94 प्रतिशत और मृत्यू दर 1.6 प्रतिशत है। वर्तमान में जिले में 163 स्थिर मरीज है, इनमें 53 होम आईसोलेशन और 110 सीसीसी व डीसीएचसी में उपचाररत है। कलेक्टर श्रीमती अनुग्रहा ने एनआरएलएम द्वारा चलाए गए मास्क के प्रति जागरूकता अभियान के बारे में तथा वर्तमान में 12 बिस्तरीय आईसीयू, ऑक्सीजन व वेंटीलेटर के बारे में भी जानकारी दी। वीसी में अपर कलेक्टर बीएस सोलंकी, सीएमएचओ डॉ. रजनी डावर व डॉ. रेवाराम कोसले उपस्थित रहे।

शहीद स्मृति दिवस पर शहीदों को अर्पित किए श्रद्धा- सुमन

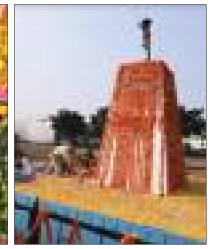

झाबुआ, आलीराजपुर और बड़वानी जिला मुख्यालय पर पुलिसकर्मियों ने शहीद सैनिकों और जवानों को श्रद्धासुमन अर्पित किए।

माही की गूंज, झाबुआ।

बुधवार को शहीद स्मृति दिवस पर देष के शहीद हुए जवानों और सैनिकों को शहर के डीआरपी लाइन मैदान पर जिला पुलिस विभाग श्रद्धांजलि कार्यक्रम का आयोजन कर श्रद्धासुमन अर्पित किए। आयोजन में विशेष रूप से जिला एवं सत्र न्यायाधीश राजेशकुमार गुप्ता, जिला कलेक्टर रोहित सिंह एवं जिला पुलिस अधीक्षक आशुतोष गुप्ता के साथ उपस्थित पुलिस अधिकारी-कर्मचारियों ने डीआरपी मैदान पर बने शहीद स्मारक पर पुष्पांजंलि कर एवं सलामी देकर सभी शहीदों को नमन किया।

सर्वप्रथम उपस्थित पुलिस अधिकारी-कर्मचारियों ने परेड के माध्यम से जिला न्यायाधीश, कलेक्टर एवं पुलिस अधीक्षक को सलामी दी। बाद शहीदों की नामावली का वाचन डीएसपी स्टेला सुलिया ने किया। पुलिसकर्मियों द्वारा हवाई फायर के साथ स्मारक पर पहले जिला न्यायाधीश गुप्ता, कलेक्टर सिंह एवं एसपी गुप्ता ने श्रद्धासुमन अर्पित किए। बाद बारी-बारी से पुलिस अधिकारी-कर्मचारियों ने भी स्मारक पर पुष्पांजलि करते हुए सभी शहीदों को सलामी देकर नमन किया। परेड एवं सलामी का नेतृत्व रक्षित निरीक्षक झाबुआ अजित कुंबले ने किया एवं व्यवस्था में विषेष सहयोग सूबेदार कोमल मीणा का रहा। इस अवसर पर एसडीओपी झाबुआ इडल मोर्य, थाना प्रभारी झाबुआ सुरेन्द्र गाड़रिया के साथ बड़ी संख्या में अन्य पुलिस अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहे।

पुलिस लाइन में शहीदों को दी गई श्रद्धांजलि

माही की गूंज, अलीराजपुर।

पुलिस शहीद स्मृति दिवस जिले में बुधवार को पुलिस लाइन में मनाया गया। इस अवसर पर पुलिस महकमे के अधिकारी व कर्मचारियों ने अपने शहीद साथियों को याद कर श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर कलेक्टर श्रीमति सुरभी गुप्ता, पुलिस अधीक्षक विपुल श्रीवास्तव, एडिशनल एसपी बिट्टू सहगल, एसडीएम श्रीमती लक्ष्मी गामड़, तहसीलदार केएल तिलवारे, एसडीओपी धीरज बब्बर सहित जिले के सभी पुलिसकर्मी मौजूद रहे। सैनिक व पुलिस दिन-रात आमजन की सुरक्षा में तैनात रहते हैं। जिस तरह से जवान देश की बॉर्डर की सुरक्षा में तैनात रहते हैं। ठीक उसी तरह पुलिसकर्मी भी देश के भीतर नागरिकों की सुरक्षा में हमेशा तैनात रहते हैं। 21 अक्टूबर पुलिस शहीद स्मृति दिवस के अवसर पर जिले के सभी पुलिसकर्मी अपने उन साथियों को श्रद्धांजलि देने के लिए एकत्रित हुए। जिन्होंने जनता व शांति की रक्षा करते हुए कर्तव्य के लिए अपना जीवन कुर्बान कर दिया। उन्हीं की याद में आज स्थानीय पुलिस ग्राउंड पर जिले के सभी पुलिसकर्मी एकत्रित हुए और अपने शहीद साथियों को श्रद्धांजलि अर्पित की।

शहीदों की शहादत को भुलाया नही जा सकता

माही की गूंज, बड़वानी।

देश व समाज की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहूति देने वाले कभी मरते नही, वरन शहीद कहलाते है। शहीद होने वालो में कोई उम्र, धर्म या क्षेत्र का बंधन नही होता।

शहीद दिवस पर शहीदो की याद में पुष्प चक्र अर्पित कर जवानो को सम्बोधित करते हुए पुलिस अधीक्षक निमिष अग्रवाल द्वारा बताया गया कि, प्रति वर्ष 21 अक्टूबर को पुलिस स्मृति दिवस के अवसर पर पुलिस स्मृति परेड का आयोजन, पुलिस के उन बहादुर साथियों को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए किया जाता है, जिन्होने कर्तव्य परायण होकर मातृभूमि के हित में अपने प्राण न्यौछावर कर दिए।

उन्होने बताया कि, 21 अक्टूबर 1959 में भारतीय सीमाओं की रक्षा करते हुए 16 हजार फिट की उॅचाई पर सीआरपी के एक उपनिरीक्षक तथा 10 जवान, चीनी हमलावरो से जूझते हुए वीरगति को प्राप्त हुए थे। इन वीर पुलिस जवानो की याद में प्रति वर्ष 21 अक्टूबर को शहीद दिवस मनाया जाता है। इन वीर पुलिस जवानों की याद में आज भी उनके शहीद स्थल पर लिखा है कि ''हम आज अपने प्राणो की आहूति दे रहे है, तुम्हारे कल के लिये'' शहादत की इस इबारद को जवान अपने प्राणो की आहूति देकर आज भी प्रति वर्ष सजीव कर रहे है। पुलिस अधीक्षक ने बताया कि, इस वर्ष देश में 264 पुलिस जवानो ने अपने प्राणो का न्यौछावर किया है, जिसमें मध्यप्रदेश के 7 जवान भी सम्मिलित है।

शहीद दिवस पर आयोजित परेड में पुलिस जवानो ने अपने शस्त्र उल्टे कर शहीद हुए अपने साथियो को श्रद्धांजलि अर्पित की।

इस अवसर पर जिला एवं सत्र न्यायाधीश राजेश गुप्ता, कलेक्टर शिवराजसिंह वर्मा, पुलिस अधीक्षक निमिष अग्रवाल, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक आरडी प्रजापति सहित जिला न्यायालय के समस्त न्यायाधीशगणो, विभिन्न विभागो के अधिकारियों, जवानो, नगर के गणमान्य नागरिको, युवाओं द्वारा शहीद स्तम्भ पर पुष्प चक्र अर्पित किये गए।

भाजपाई चुनावी सभा में किसान की हुई मौत, कांग्रेस विधायक ने दी एक लाख की सहायता

माही की गूंज, सनावद।

गत रविवार को मूंदी में भाजपा की चुनावी सभा के दौरान मृत किसान जीवन सिंह के परिजनों को विधायक सचिन बिरला, कांग्रेस पर्यवेक्षक पूर्व विधायक सत्यनारायण पटेल और कांग्रेस पर्यवेक्षक रघु परमार द्वारा प्रदेश कांग्रेस की ओर से एक लाख रुपए की सहायता प्रदान की गई। कांग्रेस दल ने मृतक जीवन सिंह के गृह ग्राम उटावद पहुंचकर जीवन सिंह के पुत्रों मुकेश, राजू और पुत्री गजराबाई को एक लाख रुपए की मदद की और संवेदना व्यक्त की। विधायक बिरला ने कहा कि, मूंदी में भाजपा की चुनावी सभा के दौरान घटी यह घटना मानवता को शर्मसार करने वाली घटना है। भाजपा की चलती सभा में एक गरीब कृषक की मौत हो जाती है। किंतु भाजपा के नेताओं ने किसान की मौत की परवाह नहीं करते हुए भाषणबाजी करना जारी रखा। पूर्व विधायक पटेल ने कहा कि, यह एक हृदय विदारक घटना है। यह घटना भाजपा नेताओं की संवेदनहीनता का परिचायक है, इसकी जितनी भी निंदा की जाए कम है। कांग्रेस पर्यवेक्षक परमार ने भी घटना की निंदा करते हुए कहा कि, चलती सभा में किसान की मृत्यु हो जाने के बाद भी भाजपा की सभा जारी रही और किसान को बजाय अस्पताल पहुंचाने के भाजपा नेता भाषण बाजी करते रहे। मृतक जीवन सिंह के पुत्र मुकेश ने बताया कि, सभा के दौरान पीने के पानी की व्यवस्था नहीं थी और पूरी खाने के बाद पानी नहीं मिला। प्रत्यक्षदर्शी ग्राम उटावद निवासी उदयसिंह ने बताया कि, भाजपा की सभा के दौरान जीवन सिंह की मृत्यु हो गई थी, मैंने ही जीवन सिंह के ऊपर कपड़ा डाला किंतु इतना होने के बावजूद भाजपा की सभा चलती रही और भाजपा नेता भाषण बाजी करते रहे।

स्वीकृत पुलिया दूसरे स्थान पर बनने की शिकायत पर कलेक्टर एवं सीईओ पहुंचे जांच हेतु

माही की गूंज, बड़वानी।

डोगरगॉव में पंच-परमेश्वर के तहत स्वीकृत पुलिया को अपने स्तर पर ग्राम रोजगार सहायक एवं सरपंच द्वारा अन्य स्थान पर बनवाने की शिकायत पर कलेक्टर शिवराज सिंह वर्मा एवं जिला पंचायत सीईओ ऋतुराज सिंह बुधवार को पैदल चलते हुए निर्मित पुलिया पर पहुंचे एवं ग्रामीणों से चर्चाकर जानकारी प्राप्त की।

शिकायत पर ग्राम पहुंचे अधिकारी द्वय को, कुछ ग्रामीणों ने बताया कि, ग्राम के विभिन्न फलियों में चार पुलिए का निर्माण उपयोगिता के आधार पर करवाया गया है, इस कार्य में किसी प्रकार की अनियमित्त्ता नही हुई है। जबकि शिकायतकर्ता ने बताया कि, अम्बा फलिया में बनने वाली पुलिया को दूसरे स्थान पर बनाकर शासन के नियमों का उल्लंघन किया गया है, इस पर कलेक्टर ने मौके पर उपस्थित ग्राम रोजगार सहायक रितेश चैहान से आवश्यक जानकारी प्राप्त कर मौके पर उपस्थित जनपद पंचायत सीईओ पाटी को निर्देशित किया कि, वे ग्राम के विभिन्न फलियों में जाकर निर्मित पुलियाओं का निरीक्षण एवं उसके फोटोग्राफ्स लेकर तथा ग्राम पंचायत में विगत 5 वर्षो में किन-किन कार्यो की स्वीकृति प्राप्त हुई थी। इसमें से कौन-कौन से कार्य कब-कब करवाए गए, इसका मिलान उपलब्ध दस्तावेजो से कर पालन प्रतिवेदन अविलम्ब प्रस्तुत करेंगे। जिससे नियमों का उल्लंघन सिद्ध होने पर दोषियों के विरूद्ध कठौर कार्रवाई की जा सके।

इसी प्रकार ग्राम के गुलसिंह कान्हा के द्वारा यह शिकायत करने पर कि, उनके बीपीएल कार्ड पर उन्हें विगत कई वर्षो से राशन नही मिल रहा है। इस पर कलेक्टर ने जनपद पंचायत सीईओ को निर्देशित किया कि, वे सहायक खाद्य अधिकारी से चर्चाकर इस शिकायत का निवारण नियमानुसार करवाएगे।

बूंद-बूंद पानी का उपयोग करने हेतु प्रशासनिक दौरा

माही की गूंज, बड़वानी। जिले के सबसे पिछड़े विकासखण्ड पाटी के किसानो की दशा सुधारने एवं उनकी आय बढ़ाने के उद्देश्य से कलेक्टर शिवराज सिंह वर्मा एवं जिला पंचायत सीईओ ऋतुराजसिंह ने बुधवार को अतरसंभा बैराज एवं बेडदा में निर्मित विशाल तालाब का निरीक्षण किया। वही ग्राम ठेंग्चा भी पहुंचकर प्रस्तावित बैराज स्थल का निरीक्षण किया। इस दौरान उनके साथ सिंचाई विभाग के कार्यपालन यंत्री जीएस मण्डलोई भी उपस्थित थे।

देखा अतरसंभा बैराज को

कलेक्टर एवं जिला पंचायत सीईओ ने ग्राम अतरसंभा में गोई नदी पर निर्मित विशाल बैराज का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होने मौके पर उपस्थित सिंचाई विभाग के कार्यपालन यंत्री श्री मण्डलोई से भी बैराज के संबंध में जानकारी प्राप्त कर उन्हें निर्देशित किया कि, विकासखण्ड पाटी में इस प्रकार के बैराज कहा-कहा पर बन सकते है,

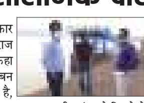

उनकी लागत क्या आएगी एवं उनसे कितने क्षेत्र में सिंचाई सुविधा उपलब्ध होगी इसका प्राक्कलन बनाकर प्रस्तुत करें। जिससे पाटी विकासखण्ड का कायाकल्प हो सके।

चोरों ने किया मोबाइल दुकान पर हाथ साफ

माही की गूंज, सनावद। नगर में पिछले 1 सप्ताह से बड़ी-छोटी अपराधिक घटनाएं लगातार बढ़ रही है। साप्ताहिक बाजार के दिन कुछ लोगों के पर्स और मोबाइल चोरी होने की सूचना थी। वही पिछ्ली रात को एक मोबाइल दुकान में बड़ी चोरी की खबर मिली, जिसमें चोर एंड्राइड मोबाइल, मोबाइल एसेसरीज, सिम कार्ड, मोबाइल की चिप एवं अन्य उपकरण चुराके ले गए। घटना की जानकारी देते हुए दुकान संचालक धर्मेंद्र सिंह ने बताया कि, सोलंकी मार्केट में मेरी दुकान है, जहां पर में रोज की तरह रविवार को दुकान बंद कर के अपने घर चला गया था, लेकिन सोमवार सुबह जब दुकान पर आकर देखा तो मोबाइल अस्त-व्यस्त पड़े थे। पहली नजर में एक बात समझ में आ रही थी की दुकान में चोरी की घटना हुई। मोबाइल दुकान के बाहर चोरो ने एक पान की दुकान की शटर का ताला तोड़कर वहां पर भी हाथ साफकरने की कोशिश की, पुलिस ने दोनों मामले में अज्ञात आरोपियों की तलाश कर रही है।

किसान ने किया नवाचार, आने वाली तीन पुस्तों के लिए लगाई फसल, अंतरवर्तीय फसल से ले रहे अच्छा मुनाफा

माही की गूंज, खरगोन।

इन दिनों कई क्षेत्रों में नवाचारों की बाढ़ सी आ गई है, इसी बीच एक किसान जो अपनी खेती करने के तरीके में भी नवाचार कर आने वाली अपनी पीढ़ियों को भी इससे स्थाई इनकम देने की दिशा में नवाचार किया है। मेनगांव के विजय पाटीदार का हमेशा यह मानना रहा है कि, उसके परिवार की भी स्थाई इनकम होती रहे, इसी दिशा में महाराष्ट्र और बिहार के कई शहरों में घुमने व किसानों से बांस की खेती के अनुभव जानने के बाद अपने 16 एकड़ की सिंचित और उपजाऊ भूमि में चार हजार पौधे लगा लिए। बांस की खेती से होने वाले मुनाफे से बेखबर कई किसान विजय की इस नवाचार कृषि पर हसने लगे और तरह-तरह की फब्तियां कसने लगे, लेकिन विजय ने मन में कुछ और ही ठान रखा था। एक तरफ तो उन्होंने 4 हजार पौधे लगा लिए, दूसरी तरफ बंबू मिशन से जुड़कर प्रति जीवित पौधे पर 30 रूपए राशि प्राप्त की, जिससे योजना का सहारा पाकर विजय का उत्साहवर्धन हुआ और अपनी गति से बढ़ता गया। विजय के 16 एकड़ भूमि पर 4 हजार पौधे जीवित है, जिससे उन्हें अगले वर्ष से शुद्ध मुनाफा होने लगेगा।

अंतरवर्तीय फसल से हुआ भरपूर मुनाफा

विजय पर उनके साथी किसान तरह-तरह की बातें कर कोसने लगे। विजय उनकी परवाह किए बगैर अंतरवर्तीय फसलों में प्रयोग करने लगा, उनका यह प्रयोग सार्थक व सफल साबित हुआ। जहां इस वर्ष मिर्च की फसल में वायरस के अटैक से हर किसान परेशान होता नजर आ रहा है। वहीं विजय अपनी मिर्च की फसल से काफी संतुष्ट होकर अच्छे मुनाफे की उम्मीद लगाए हुए है। विजय का कहना है कि, बांस (बंबू) की खेती से इस वर्ष उनकी फसल में वायरस का अटैक नहीं हुआ है। उनके आसपास के खेतों में मिर्च की फसलें खराब हो गई है, इससे पूर्व 2019 में बांस के बीज में अंतरवर्तीय फसल लेकर इसी मिर्च की फसल से 46 लाख रूपए का मुनाफा लिया है, इसके अलावा वर्ष 2018 में मिर्च से 2 लाख रूपए प्रति एकड़ और कपास से ढ़ाई लाख प्रति एकड़ का मुनाफा लिया है।

सिर्फएक पानी से ही पनपता है बांस

विजय बताते है कि, कई ऐसी फसलें है, जिन्हें भरपूर पानी की आवश्यकता होती है। हालांकि उनके कुंए में गर्मी के मौसम में भी पर्याप्त पानी उपलब्ध रहता है, लेकिन बांस को केवल गर्मी के मौसम में सिर्फएक पानी से ही काम चल जाता है। बिहार व महाराष्ट्र के किसानों के अनुभव के आधार पर विजय ने 20 बाय 7 के अनुपात में बांस लगाकर बीच-बीच में मिर्च, कपास, अरबी, धनिया व अन्य तरह की सब्जियां भी अंतरवर्तीय फसलों के तौर पर ले रहे है। इस वर्ष उन्होंने अंतरवर्तीय फसल में अदरक का प्रयोग किया है। विजय अपने फसलों के रख रखाव में धीरे-धीरे जैविक खेती के रूप में भी आगे बढ़ रहे है।

खंडवा आकाशवाणी स्थापना दिवस पहली बार मनाया

माही की गूंज, सनावद।

नगर एवं बडवाह के श्रोताओं ने आकाशवाणी खंडवा के 30 वे स्थापना का आयोजन पहली बार आयोजित कर हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। जिसमे मौजूद सदस्यों ने अधिक से अधिक नागरिको को इससे जोड़ने की अपील की।

निमाड़ की सुरीली धड़कन आकाशवाणी खंडवा का 30 वां स्थापना दिवस पर सनावद बड़वाह सुरगांव जूनापानी शिवकोठी गवल के श्रोताओं ने उत्साह के साथ मनाकर अपनी खुशी जाहिर की। सक्रिय श्रोता पिंटू सेन के निवास पर हुए कार्यक्रम में विशेष अतिथि सामाजिक कार्यकर्ता विवेक विद्यार्थी वरिष्ठ समाजसेवी कपिल तिवारी की अध्यक्षता में संपन हुआ। कार्यक्रम में श्रोताओं ने अपने-अपने विचार रखें। निमाड़ रेडियो श्रोता संघ के अध्यक्ष हुकुमचंद कटारिया ने कहा कि, आकाशवाणी शिक्षा मनोरंजन और ज्ञान का माध्यम है। और यह बड़ी खुशी की बात है कि, सनावद, बड़वाह में आकाशवाणी सुनने वाले श्रोताओं की संख्या अधिक है और आकाशवाणी से सभी वर्ग के लिए कार्यक्रम होते हैं। बच्चों के लिए युवाओं के लिए बुजुर्गों के लिए युवाओं के लिए और मनोरंजन के भी अनेकों अनेक साधन है और आजकल यह कार्यक्रम मोबाइल ऐप पर भी आने लगा है। बडवाह से आए प्रवीण श्रीमाली ने कहा कि, आकाशवाणी एक ऐसा परिवार है। जिसे हम रेडियो श्रोता परिवार कहते हैं। जब भी कोई आकाशवाणी से जुड़ा कार्यक्रम होता है, तो सब एक साथ मिलकर उसे मनाते हैं। पुष्पेंद्र रावल ने कहा कि, आकाशवाणी का आज भी वही महत्व है, जो आज से हम 50 वर्ष पहले आकाशवाणी को सुनते थे। पिंटू सेन ने कहा कि, आकाशवाणी हमें एक दूसरे से जोड़ने का सबसे सरल और सुलभ साधन है। किशोर सांवलिया विजय सोनी ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे कपिल तिवारी ने अपने 55 साल के अनुभव बताते हुए पुराने समय की बात नए श्रोताओं को बताकर उन्हे पुरानी यादों से जोड़ा। मुख्य अतिथि विवेक विद्यार्थी ने भी अपने संबोधन में कहा कि आकाशवाणी वास्तविक यह ज्ञान की पहली सीढ़ी है। जिसके माध्यम से कोई भी कलाकार सबसे पहले आकाशवाणी से जुड़ता है। तभी किसी एक स्थान पर पहुंचता है, कोई कलाकार बनता है, कोई लेखक बनता है, कोई कवि बनता है, इसमें आकाशवाणी के अहम भूमिका है और इस अवसर पर बाबूलाल चौधरी अशोक वर्मा, कालू सिंह बडोले, पप्पू सेन, नंदराम सारे, अबरार भाई कृष्णचन्द्र सोहनी आदि श्रोता उपस्थित होकर आयोजन में शामिल हुए, अंत मे 30 वे प्रवेश पर केक काट कर खुशी जाहिर की।

पैतृक संपत्ती को लेकर नामी-गिरामी पुरखों की प्रतिष्ठा विवाद के चलते आ गई सड़क पर

माही की गूंज, खवासा।

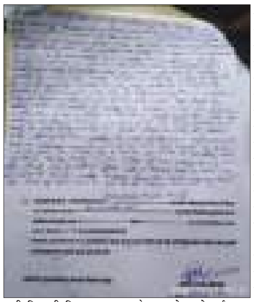

खवासा का एक यह इतिहास रहा है कि, खवासा के राजा के बाद दो शख्सियत ऐसी रही जिनके नाम का डंका खवासा सहित क्षेत्र में बजता था जिसमें से एक नाम आलम खान तो दूसरे का नाम नानालाल भटेवरा था।

बात करें आलम खान जी की तो उनकी दो पत्नियां थी, प्रथम का नाम खानम बी जिनके पुत्र अकबर खान व लाल खान तो वही प्रथम पत्नी के देवलोक के बाद द्वितीय पत्नी मरियम बाई से निकाह किया उनकी कोख से एहमद खान व लतीफखान ने जन्म लिया। आज माही की गूंज आलम खान की प्रतिष्ठा के साथ उनकी तीसरी व चौथी पीढ़ी, पैतृक संपत्ति को लेकर ऐसे विवादों में घिरी है कि वे अपने पुरखों की प्रतिष्ठा को भूलकर विवादों के साथ सड़क पर आ खड़े हुए हैं।

माही की गूंज आज एक प्रयास अपनी लेखनी के साथ ऐसा कर रहा है कि, सड़क पर आए इन परिवारों में हमारे लिखे एक भी शब्द दिलो-दिमाग में अगर बैठ जाते हैं तो आगे से आलम खान की प्रतिष्ठा व सम्मान कम से कम पैतृक संपत्तियों को लेकर विवादों के साथ सड़क पर न आए और माही की गूंज आशा करता है कि, हमारी लेखनी दुख तो पहुंचाएगी परंतु आपसी सुलह के लिए नीव का पत्थर साबित होगी। हमारी कलम सदैव जनहित के लिए चलती रही है और सदैव चलती रहेगी आज एक परिवार के पुरखों की प्रतिष्ठा के साथ परिवार में सामंजस्य बना रहे के उद्देश्य से लिखी जा रही यह घटना।

इस कलमकार का जन्म भी खवासा की इसी धरा पर हुआ और जब से हमने खवासा के बारे में जाना या समझा तो हमें बुजुर्गों ने यही बताया कि, खवासा के राजघराने का डंका सभी और बजता था, वही राजघराने के बाद खवासा में ऐसी दो शख्सियत रही है जिसमें से एक आलम खान सेठ का नाम था।

दिवंगत आलम खान जी की बात करें तो उन्होंने अपने दायित्व का सामाजिक निर्वहन उनकी उपस्थिति में ही दोनों पत्नी के चारों पुत्रों के मध्य संपत्तियां देकर व खवासा, बामनिया में जमीन देकर अपना कर्तव्य पूरा किया था, ताकि भविष्य में कोई उनके देवलोक के बाद परिवार में ऐसा मोड़ न आ जाए कि, उनकी प्रतिष्ठा को दोनों पत्नी से जन्मे पुत्र व परिवार सड़क पर आकर धूमिल न कर सके। परंतु आज देखा जा रहा है कि, जिस तरह से परिवार में पैतृक संपत्ति को लेकर विवाद के साथ सड़क पर आ गए हैं जिसे देखकर उनकी आत्मा भी रो रही होगी।

वर्तमान में प्रथम पत्नी के पुत्र अकबर खान के पुत्र असगर खान, सिद्दीक खान, लईक खान, शरीफखान के साथ पोते परिवार ने भी न्यायिक प्रक्रिया हेतु संपत्ति पर खवासा के मकान नंबर 331, 333 एवं 352 के साथ सर्वे नंबर 538 एवं 1093 की करीब 11-11 आरा भूमि पर अपना अधिकार जताकर परिवाद न्यायालय में पेश किया, मामला यहीं नहीं रुका परिवाद पेश करने के साथ ही अनाउंसमेंट करवा कर सूचित भी किया गया कि, उक्त सर्वे नंबर के मकान व कृषि भूमि कोई भी व्यक्ति क्रय नहीं करें अन्यथा समस्त जवाबदारी खरीदार की होकर न्यायालय में प्रकरण उनके विरुद्ध पंजीबद्ध किया जाएगा। वही अखबारों में जाहिर सूचना के साथ ही सूचना के पर्चे अखबारो में डलवाकर बटवाए व ग्राम में पर्चे तक चस्पा किए गए। पर्चे चस्पा करने के बाद उक्त पारिवारिक विवाद ने एक नया मोड़ लिया और मामला मारकूट व एफआईआर तक पहुंच गया। पर्चे बटवाने व चस्पा करने की भूमिका निभाने वाले भावउद्दीन काजी के पिता इसरारउद्दीन काजी जोकि खवासा में ही निवासरत है। चुकी यह न्यायिक पारिवारिक विवाद आज नहीं तो कल आपसी सुलह के साथ निपट जाएगा पर भावउद्दीन इस पारिवारीक मसले पर क्यो पर्चे बंटवा रहा व चस्पा कर रहा है की बात के साथ भावउद्दीन के पिता इसरारउद्दीन काजी को आपसी में चर्चा करने हेतु लतीफखान के पुत्र सईद खान उनके भतिजे सोएब खान की देवगढ मार्ग खवासा में स्थित दुकान पर ले ही गए थे कि, आपसी चर्चा चल ही रही थी कि इसी बिच लाल खान के एक पोता जो गर्म मिजाजी से जाना जाता है ने बिना किसी सोचे समझे ही घर पर बुलाकर चर्चा करने हेतु ले गए इसरारउद्दीन पर पिछे से हाथ उठा दिया और वे निचे गिर गए। स्थिती को देख सईद खान एवं परिवार ने उसी समय इंसानियत के नाते माना कि, अपने घर दुश्मन भी आया तो उस पर कभी हाथ नहीं उठाया जाता और त्वरित सईद खान ने अपने एक अन्य भतीजे के साथ इसरारउद्दीन काजी को घर ले गए और वहा से पेटलावद हॉस्पिटल तक छुड़वाया। परंतु घर पर चर्चा करने हेतु बुलाकर ले जाने के बाद हुई मारपीट की बात लईक खान, शरीफखान एवं परिवार के साथ इसरारउद्दीन काजी के पुत्र भावउद्दीन को भी नागवार गुजरी और भावउद्दीन की सूचना रिपोर्ट पर इसरारउद्दीन काजी के साथ हुई मारपीट पर शाकिर पिता भोले खान अमरगढ़ हाल मुकाम रतलाम, सईद पिता लतीफखान, रसीद पिता लतीफ खान व जफरुल्लाह पिता अहमद खान निवासी खवासा के विरुद्ध 294, 323, 506, 34 आईपीसी के तहत मामला दर्ज किया गया जिसके बाद शोएब पिता रशिद खान ने भी पुलिस चौकी खवासा पर सूचना रिपोर्ट दर्ज करवाई गई।

उक्त सारे घटनाक्रम को देखते हुए ग्राम में चर्चा चली की संपत्ति के बंटवारे व जिनके पास सब कुछ होने के बाद भी आज संपत्ति के मूल्य बढ़ जाने के कारण अपने प्रतिष्ठित पुरखों की प्रतिष्ठा को सड़क पर लाकर खड़ा कर दिया जो शायद सही नहीं है। वही अब लतीफखान, एहमद खान का परिवार अपने तर्क के साथ कह रहे हैं कि, आलम खान की बड़ी पत्नी खानम बी यानी हमारी बड़ी अम्मी के पुत्र अकबर खान व लालखान के पुत्र व परिवार के साथ हमारे आज भी अच्छे संबंध थे और ऊपर वाले ने चाहा तो आगे भी अच्छे ही संबंध रहेंगे के साथ बताया कि, लालखान को हमारे बड़े अब्बा आलम खान जी ने खवासा में हमारे सामने वाला मकान जो कि, वर्तमान में 352 नंबर पर पंचायत में दर्ज है व अमरगढ की कुछ जमिन भी दी थी, और लालखान के 3 पुत्र जो देवलोक हो गए वही जो परिवार है उन्होंने कभी भी एहमद खान व लतिफखान को मिली संपत्ति 331, 333 मकान नंबर व 538 व 1093 की सर्वे भूमि पर अपना हक नहीं जताया। वही अकबर खान जी को मिली बामनिया मे हक की भूमि को बेचकर उनके पुत्र कोई भोपाल तो कोई मंदसौर में जाकर बस गए और अब जिस पैतृक संपत्ति का बंटवारा आलम खान जी कर गए थे उस पर आज थोड़ी बहुत कीमत बढ़ जाने पर परिवाद पेश कर रहे हैं यह कहां तक न्याय संगत है, यह कहां जा रहा है।

वही गूंज कि पूरे मामले में अकबर खान के वारिस लईक खान प्रधान आरक्षक से बात की तो बताया, हमारा लतीफखान व एहमद खान परिवार से दूर रहकर भी अच्छा संबंध है पर हम हमारा पैतृक संपत्ति पर हक जता रहे हैं, जनवरी 1976 में आलम खान जी का निधन हुआ था जिसके बाद 538 व 1093 सर्वे नंबर की भूमि को लतीफखान के नाम से दर्ज करवा लिया जिस पर हमारा भी हक है, वही पूरे मामले में जो भी न्यायिक प्रक्रिया होगी वह ठीक है पर किसी व्यक्ति को घर पर बुलाकर उसके साथ मारपीट करना कहां तक न्याय संगत है कह कर अपना गुस्सा भी जाहिर किया।

इन्हीं बातों के साथ अब दोनों परिवार के मध्य से ऐसी कई बातें भी सामने आ रही है जो देश की आजादी के समय कौन पाकिस्तान गया था और कौन भारत में रहकर भारतीय मूल का है यह सारी बातें आज आलम खान की प्रतिष्ठा को धूमिल ही कर रही है। जब हमारी कलम उनकी प्रतिष्ठा को सलाम कर रही है तो आप एक परिवार के होकर पुरखों की प्रतिष्ठा को नीलाम करने पर क्यों तुले हैं?

गूंज इस परिवार से यही कहना चाहता है कि, जिस प्रतिष्ठित आलम खान के परिवार में रिटायर्ड टीआई शरिफ खान, रिटायर्ड हेड कांस्टेबल लईक खान के साथ इंजीनियर भी है वे मानवता का परिचय देकर आपसी सुलह के साथ वे अपने पुरखों की प्रतिष्ठा को बचाए, नहीं तो यह विवाद ना जाने कहां जाकर रुकेगा, यह हम भी नही बता सकते।

महामंडलेश्वर 1008 स्वामी के प्रथम नगर आगमन पर बजरंग सेना ने किया स्वागत

माही की गूंज, झकनावदा। आनंदसिंह सोलंकी

मंगलवार को आचार्य महामंडलेश्वर 1008 स्वामी श्री प्रणवानंद सरस्वती जी महाराज वृंदावन धाम से धर्म जागरण यात्रा की अलख जगाते हुए जब झकनावदा राजगढ़ रोड स्थित खेड़ापति हनुमान मंदिर पहुंचे तब वहां पर बजरंग सेना के नगर संयोजक चंद्रशेखर राठौर, भोला लोहार, भोला प्रजापत, महेंद्र प्रजापत, डॉ रमेश सोलंकी, अभय जैन, मांगीलाल पडियार, वीरेंद्र गोस्वामी, कुलदीप आचार्य एवं अन्य ग्रामीणजन द्वारा उनका स्वागत पुष्पमालाओ से किया गया। इस धर्म जागरण यात्रा की शुरुआत कालीदेवी से महज 3 किलोमीटर दूर रोटला गांव से की गई। आपको बता दें कि, इनकी यात्रा का प्रमुख उद्देश्य आदिवासी समाज में उनकी संस्कृति, धर्म शिक्षा, रहन-सहन, खानपान एवं वेशभूषा से संबंधित उपदेश भी लोगों को दिए गए।

दूसरे दिन की यात्रा में स्वामी जी झकनावदा से 5 किलोमीटर दूर माही नदी के पावन तट पर स्थित श्रृंगेशवर धाम पहुंचे, जहां पर उन्होंने सर्वप्रथम बाबा भूतेश्वर महादेव के दर्शन किए एवं उसके बाद श्री श्री 1008 श्री काशी गिरी जी महाराज की समाधि के दर्शन किए एवं पंचमुखी हनुमान बाबा के दर्शन किए। इस अवसर पर महंत रामेश्वर गिरी जी महाराज एवं स्वामी जी के सेवक, हिंदू जागरण धर्म समिति के प्रमुख वालसिंह मसानिया, रायपुरिया मंडल अध्यक्ष अजमेर सिंह भूरिया आदि उपस्थित थे।

नवरात्रि में कालिका माता मंदिर पर भक्तों का लगा तांता

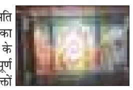

माही की गूंज, रतलाम। रतलाम के अति प्राचीन एवं सिद्ध कालिका माता मंदिर का दरबार एक बार पुनः कोविड-19 के नियमों के अंतर्गत सज गया है सबकी मनोकामना पूर्ण करने वाली माता के दरबार में तड़के से ही भक्तों का तांता लगना शुरू हो गया था। माता-बहने एवं पुरुष लंबी लाइनों में खड़े देखे गए। इस बार कोविड-19 के नियमों के चलते भक्तों से सोशल डिस्टेंसिंग का पालन कराया जा रहा है तथा मंदिर प्रशासन के द्वारा विशेष व्यवस्था की गई है इस बार भक्तों को माता के दर्शन गर्भगृह से नही होगे। उल्लेखनीय है कि, रतलाम का कालिका माता मंदिर अति प्राचीन मंदिरों कर एक सिद्ध पीठ माना जाता है तथा कहा जाता है कि, यहां माता सुबह, दोपहर और शाम को तीन अलग-अलग रूपों में दर्शन देती है तथा कभी भी यहां से भक्त निराश होकर नहीं लौटते एवं उनकी सभी मनोकामनाएं यहां पर पूरी होती है। इस बार माता के प्रांगण में लगने वाला भव्य कालिका माता मेला कोविड-19 के चलते निरस्त रखा गया है तो, वही प्रांगण में होने वाला भव्य गरबा भी इस बार नहीं होंगा। परंपरा खंडित ना हो तथा नियम बना रहे इसके लिए कुल बाईस अराधिकाओ द्वारा गरबा किया जाएगा, एक समय में 11 आराधिकाओ द्वारा गरबा किया जाएगा इस दौरान गरबा स्थल पर पर्दा लगाया जाएगा जिससे देखने वालों की भीड़ ना उमड़े। प्रतिवर्ष अनुसार कालिका माता मंदिर को भव्य विद्युत सज्जा से सजाया जाता है परंतु इस बार इसका अभाव देखने में आ रहा है जिसका आम जनता खुलकर विरोध कर रही है तथा उनमें आक्रोश व्याप्त है इसका सोशल मीडिया पर भी काफी विरोध हुआ। भक्तों का मानना है विद्युत सज्जा और कोविड-19 का कोई लेना देना नहीं है यह एक बहुत बड़ी लापरवाही है।

शक्ति की भक्ति में डर का साया

माही की गूंज, खवासा।

कोविड-19 की असामान्य परिस्थितियों के चलते इस वर्ष होली के बाद से ही सभी त्योहारों की रंगत फीकी नजर आ रही है, चैत्र नवरात्रि में तो लॉकडाउन लगा था, जिसके चलते कहीं भी कोई भी आयोजन नहीं हुआ था, किंतु शारदीय नवरात्र में भले ही लॉकडाउन हटा लिया गया है, लेकिन फिर भी भय का माहौल तो बना हुआ ही है, जिसके चलते धूमधाम और बड़े स्तर से होने वाले आयोजन छोटे हो गए हैं और भव्यता की जगह सादगी ने ले ली है। हालांकि इस दौरान मां की आराधना व भक्ति में कोई कमी नहीं है जप ओर तप तो जारी है केवल गरबा कार्यक्रम नहीं हो रहे हैं, प्राचीनतम रोग्यादेवी मंदिर पर मां की आराधना का दौर जारी है मान्यता है कि, रोग्यादेवी रोगो को हरने वाली है तथा आरोग्य प्रदान करती है। वर्तमान महामारी से मुक्ति हेतु भी मां की आराधना की जा रही है, वहीं स्थानीय हनुमान मंदिर पर संकट मोचन मित्र मंडल द्वारा भी सरकारी गाइडलाइन के अनुरूप माता जी की प्रतिमा स्थापित कर शक्ति की आराधना की जा रही है। शंकर मंदिर पर गायत्री परिवार द्वारा जाप किया जा रहा है और अंतिम दिवस पर महायज्ञ विश्व कल्याण की भावना से किया जाएगा। वही आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में भी सरकारी नियमों का पालन करते हुए माता जी की आराधना की जा रही है, कई जगह पावागढ़ से अखंड और पवित्र ज्योत लाकर स्थापना की गई है।

शिलालेख पर विधायक का नाम नहीं होने पर कांग्रेस ने जताया विरोध

माही की गूंज, झकनावदा।

गत दिवस झकनावदा के बालिका वन कन्या आश्रम का प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा कोविड-19 को देखते हुए वर्चुअल लोकार्पण किया गया गया, जहां भाजपा के सांसद प्रतिनिधि एवं कांग्रेस के पेटलावद विधायक प्रतिनिधि व स्थानीय जनप्रतिनिधि की उपस्थिति में कन्या आश्रम का लोकार्पण किया गया। लोकार्पण के दौरान फीता काटने पर स्थानीय कांग्रेसी विधायक प्रतिनिधि जितेंद्र राठौड़ द्वारा शिलालेख पेटलावद क्षेत्र के विधायक वालसिंह मैड़ा का नाम शिलाअभिलेख पर नहीं होने पर नाराजगी जाहिर कर बीच कार्यक्रम से आयोजन को छोड़ कर लौट गए थे और विधायक प्रतिनिधि जितेंद्र राठौर ने प्रशासन पर आरोप लगाया है कि, क्षेत्रीय विधायक का नाम शिलालेख पर नहीं लिखा गया एवं उनकी उपेक्षा की गई है। विधायक प्रतिनिधि ने जिला कलेक्टर को फोन लगा कर मामले से अवगत करवाया। विधायक वालसिंह मैड़ा ने बताया कि, प्रशासन द्वारा मेरी उपेक्षा की गई है, मेरे प्रतिनिधि द्वारा ज्ञात हुआ कि मेरा नाम शिलालेख पर नहीं है। मैं इस मामले को विधानसभा में उठाऊंगा।

कोरोना से बचाव के लिए बच्चों को दिलाई शपथ

माही की गूंज, झकनावदा। कोरोना से बचाव मास्क ही वेक्सीन हे मुहिम का हिस्सा बने स्कूल के स्टाफ एवं बच्चों ने शपथ ली कि, हम नियमित रूप से मास्क का उपयोग करेंगे एवं बार-बार हाथों को साबुन व सैनिटाइजर से धोएंगे संकुल के प्राचार्य रमेश कुमार चौरसिया ने बताया कि, जब तक इस कोरोना बीमारी की दवाई नहीं बन जाती तब तक सतर्कता ही एकमात्र उपाय है, हमें हमारे मित्र व परिचत वालों को मास्क लगाने हेतु प्रेरित करना चाहिए कि, जब तक दवाई नहीं बनती है मास्क एवं हाथो की सफाई और सोशल डिस्टेंसिंग का पालन ही कोरोना का बचाव का एकमात्र उपाय है, जिससे कोरोनाा जैसी घातक बीमारी से पूर्ण रूप से बचा जा सकता है। शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के संस्था द्वारा बच्चों को संस्था में प्रवेश होने पर मास्क, सैनिटाइजर, टेंपरेचर नाप कर ही स्कूल में प्रवेश करवाया जाता है, समझाइश दी जाती है कि, आपको अपने परिवार के सदस्यों को सर्दी, जुखाम, बुखार जेसी कुछ भी शिकायत हो तो शासकीय चिकित्सालय में जाकर जांच करवाएं इस अवसर पर शिक्षक राकेश कुमार मग ने बच्चों को शपथ दिलवाई, साथ ही इस अवसर पर संस्था के नारायण दास बैरागी सहित संस्था के कर्मचारी उपस्थित रहे।

आर्मी तथा पुलिस भर्ती की तैयारी करने वाले युवाओं के लिए सुनहरा मौका

माही की गूंज, झाबुआ। जिले के ऐसे युवा जो आर्मी अथवा पुलिस भर्ती की तैयारी कर रहे हैं। उनके लिए खेल और युवा कल्याण विभाग, आदिम जाति कल्याण विभाग, शिक्षा विभाग तथा उच्च शिक्षा विभाग के सहयोग से युवाओं को फिजीकल फिटनेस तथा लिखित परीक्षा का निःशुल्क प्रशिक्षण दिया जाएगा। फिजीकल फिटनेस तथा लिखित परीक्षा का निःशुल्क प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए युवतियों का पंजीयन 23 अक्टूबर को तथा युवकों का पंजीयन 24 अक्टूबर को सुबह 11 बजे से दोपहर 3 बजे के मध्य कार्यालय जिला खेल और युवा कल्याण अधिकारी, बहुउद्देशीय खेल परिसर कलेक्टर कार्यालय के पीछे जिला झाबुआ पर किया जाएगा। पंजीयन में भाग लेने के इच्छुक युवा अपने साथ जन्म का प्रमाण, आधारकार्ड अनिवार्यतः साथ लाएं।

नाम बड़े और दर्शन खोटे, फैल हुई भाजपा की ट्रेक्टर रैली, निर्मला भूरिया की राजनीतिक जमीन हुई कमजोर

100 ट्रेक्टर का दावा हुआ फेल, तीन मंडल से 15 ट्रेक्टर भी नही पहुंचे, किसान बिल के विरोध में कांग्रेस ने कसा तंज

माही की गूंज, पेटलावद।

भाजपा का गढ़ माने जाने वाले पेटलावद विकास खण्ड में शुक्रवार को आयोजित किसान बिल के समर्थन में किसान ट्रेक्टर रेली फ्लॉप शो बन कर रह गई, कार्यक्रम की प्रभारी, पूर्व विधायक निर्मला भूरिया थी जिनके पास एक बार फिर से अपना प्रभाव दिखाने का बड़ा मौका था, लेकिन लगातार कमजोर होती निर्मला भूरिया की राजनीतिक जमीन के कारण रैली को सफल बनाने मे चूक गई, जो निकट भविष्य में निर्मला भूरिया के लिए परेशानी का सबब बनेगा। वही राजनीतिक विरोधीयो ने कार्यक्रम को असफल करने में कोई कसर नही छोड़ी, जिससे पेटलावद विधानसभा में चल रही भाजपाई गुटबाजी एक बार फिर उभरकर सामने आई और जिनको जिम्मेदारी मिली उन्होंने कार्यक्रम में कोई रुचि नही दिखाई।

शुक्रवार को भाजपा द्वारा किसान बिल के समर्थन में पूरे जिले में हुई आयोजित किसानों की ट्रेक्टर रैली का आयोजन विकास खण्ड स्तर पर रखकर किसान बिल का समर्थन किया जाना था। कार्यक्रम जिला भाजपा द्वारा तय किए गए, जिसके तहत शुक्रवार को पेटलावद में ट्रैक्टर रैली का आयोजन था, रैली से पूर्व भाजपा नेताओं ने अलग-अलग बैठके कर 100 से अधिक ट्रेक्टर की रैली निकालने के दावे भरे जा रहे थे लेकिन ट्रेक्टर रैली फेल हो गई और तीन मंडलों से मिलाकर केवल 12 ट्रेक्टर ही आयोजन में पहुचे। चुकी पूरा आयोजन ट्रेक्टर की संख्या पर आधारित था, ट्रेक्टर कम होने से पार्टी के कई बड़े नेता बदनावर चुनाव में प्रचार का झांसा देकर निकल गए। कार्यक्रम की प्रभारी निर्मला भूरिया भी बदनावर जाने की जल्दबाजी करती दिखाई दी और ट्रेक्टर रेली लगभग कैंसल कर केवल एक सभा के रूप में बदल गई लेकिन बाद में रैली नही होने की किरकिरी से बचने के लिए रैली में आए मात्र 12 ट्रेक्टर के साथ कृषि मंडी से रैली निकाली गई।

जमीनी स्तर पर गायब भाजपा, आपसी फूट के कारण नही आए ट्रेक्टर

सबसे मजबूत जिस विकास खण्ड में भाजपा मानी जाती है उसी में होने वाला आयोजन फेल हो गया, जिसके पीछे मुख्य कारण भाजपा की आपसी फूट माना जा रहा है। विकास खंड में 78 पंचायत आती है जहा से प्रति पंचयात दो ट्रेक्टर लाने का टारगेट भाजपा ने रखा था लेकिन अंतिम समय मे तीनो मण्डल के अध्यक्ष मिलकर सम्मानजनक संख्या बल में ट्रैक्टर नही ला सके। ग्रामीण मंडल जहा से सबसे अधिक संख्या में ट्रैक्टर आने के दावे भरे जा रहे थे लेकिन यहाँ से भी ट्रेक्टर नही आ सके। वही कार्यक्रम में बमुश्किल पहुचे 12 ट्रेक्टर के लिए भी तीनो मण्डल के नेता अपना-अपना प्रभाव दिखाने का प्रयास करते रहे, नगर परिषद के प्रत्येक पार्षद को एक ट्रैक्टर लाने का टारगेट था लेकिन एक-दो पार्षद को छोड़कर बाकी हाथ हिलाते हुए ही प्रोग्राम में पहुच गए। कार्यक्रम में होने वाले खर्च के लिए नेता एक दूसरे का मुह ताकते रहे, अब जिले के भाजपा के नेता ही कह रहे हैं कि, पेटलावद के नाम बड़े और दर्शन खोटे। कुल मिलाकर उक्त आयोजन के बाद झाबुआ जिलाध्यक्ष लक्ष्मण सिंह नायक और उनके गुटबाजी से प्रेरित पुराने संगठन पर सवाल खड़े हो रहे हैं। आजोयन की व्यवस्था संभाल रहे पेटलावद नगर मंडल से भी जिलाध्यक्ष खासे नाराज दिखे।

कांग्रेस ने ली चुटकी

आयोजन की असफलता के बाद कांग्रेस नेता गदगद है और नगर में 10-12 ट्रेक्टर के साथ निकली रैली पर चुटकी लेते हुए कहा कि, किसान बिल भाजपा नेता तो नही समझ पाए लेकिन किसान समझ गए हैं कि, ये बिल किसान के पक्ष में नही है इसलिए ग्रामीण किसान रैली में शामिल नही हुए ओर जो लोग ट्रेक्टर में बैठ कर घूम रहे थे वो बाजार के लोग थे जिनको खेती किसानी का 'अ' भी नही आता हैं।

सूचना के अधिकार के तहद जानकारी मांगने पर जनपद पंचायत, पंचायतों के सरपंच-सचिव और सहायको की मनमानी

माही की गूंज, च.शे.आजाद नगर। अभिषेक गुप्ता

ग्राम गेरुघाटी पंचायत से सूचना के अधिकार के तहत जानकारी मांगना मतलब पत्थर से अपना सिर फोड़ना है। सूचना के अधिकार के तहत जानकारी जनपद पंचायत की ग्राम पंचायत गेरुघाटी का एक और मामला सामने आया है जिसमे कु. कृष्णा पिता करमसिंह ने पंचायत में स्वीकृत हुए कार्यो ओर उसमे भुगतान की प्रमाणित प्रतिलिपियां मांगी है, परन्तु भ्रष्टाचार के उजागर होने के डर से आज दिनाक तक जानकारी नही दी गई। कु. कृष्णा ने मुख्यकार्यपालन अधिकारी में भी अपील की थी, परन्तु आज तक जानकारी नही दी गई है, लगता है आजाद नगर जनपद पंचायत के अंतर्गत आने वाली पंचायतों में भारी भ्रष्टाचार किया जा रहा है, जिसकी पोल न खुल जाए इसके लिए निर्माण और भुगतान से सम्बंधित कोई भी जानकारियां देने में सरपंच-सचिव, सहायक सचिव के अलावा जनपद के मुख्यकार्यपालन अधिकारी भी आनाकानी कर रहे है।

छोटे से गांव की बेटी का हुआ एम्स में चयन

माही की गूंज, रतलाम। जिले के पिपलोदा तहसील के गांव रणायरा की सीमा पिता नागुलाल कुमावत जिनका चयन देश के मुख्य अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान दिल्ली में हुआ है। जिससे परिवार व पूरे गांव में खुशी का माहौल है सीमा के सभी सहपाठियों ने बधाइयां दी ओर अपने मोबाइल पर स्टेटस लिखकर खुशी व्यक्त कर रहे है। सीमा ने अपनी सफलता का श्रेय परिवार और गुरुजन को दिया है। सीमा की प्रारंभिक शिक्षा रणायरा व उसके बाद इंदौर इंडेक्स नर्सिंग कॉलेज में पढ़ाई की। उत्तरप्रदेश ओर मध्यप्रदेश के अन्य संस्थानो मे सेवा देते हुए अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान के लिए भी तैयारी करती रही, जिसमे आखिरकार उनका चयन हो गया। अब उनको देश मे 15 जगह एम्स की शाखाओ मे से रैंक के अनुसार एक जगह पर इनको सेवा का मौका मिलेगा। पिता नागूलाल ने बताया कि, कोशिश करने से सफलता एक दिन जरूर मिलती है।

शिकायत का अंबार पर नतीजा आज तक शून्य

बाबू अटकन और जोशी पर आखिर इतनी शिकायतों के बाद भी क्यों नहीं की गई कार्रवाई?

मामूली गलती पर बाबू को निलंबित करने वाला विभाग खुद को बचाने के लिए नही कर रहा कार्रवाई

माही की गूंज, झाबुआ। संजय भेटवरा

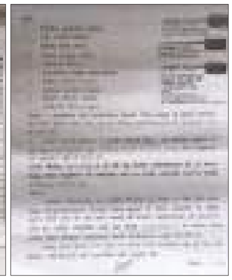

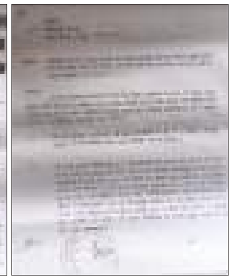

कलेक्टर से लेकर मुख्यमंत्री तक की गई इन शिकायत पत्र की तरह 400 से अधिक शिकायत पत्र भेजे गए।

अंशकालिक से लेकर पुर्णकालिन तक विभाग द्वारा की गई अवैध नियुक्ति, अवैध वेतन भुगतान और वित्तीय अनियमित्ता के पूरे खुलासे के बाद अब तक विभाग के अधिकारी और जिला कलेक्टर द्वारा कोई कार्रवाई नही की गई है, हालांकि मामला पहले से उच्च अधिकारियों के संज्ञान में है, लेकिन पहली बार ऐसा हुआ है कि, पूरा मामला अखबार में छपी खबरों के माध्यम से सार्वजनिक हुआ है, उसके बाद से विभाग में हर कोई बाबू और अधिकारियों के गठजोड़ को स्वीकार कर दबी जुबान से मामले में कार्रवाई होंने का इंतजार कर रहे हैं, खासकर वो बाबू ओर विभाग के कर्मचारी जिनकी मामुली गलती के कारण निलंबित का दंश झेलना पड़ा था।

केश बुक का टोटल नही लिखने पर हो चुका है निलंबित विभाग का बाबू

फर्जी नियुक्ति की जाच के मामले से बीईओ कार्यालय से वर्ष 2017-18 में हटाए गए रामचंद्र अटकान के स्थान पर भेजे गए बाबू शिवदत्त राठौर को केवल इसलिए निलंबित कर दिया गया क्योंकि, बाबू ने पिछली केश बुक का टोटल अगली कैशबुक में नही उतारा था और उसे निलंबित कर दिया गया। मामला पहले से तय था, अधिकारी नही चाहते थे कि कोई नया बाबू इस कुर्सी पर बैठ जाए, इसलिए तत्कालीन सहायक आयुक्त बिजी मेहता जो कि संभाग उपायुक्त इंदौर पर पदस्थ थे और जिले के दौरे पर पेटलावद पहुचकर बीईओ कार्यालय के रिकॉर्ड की जांच की, जिसमे मामूली सी गलती पाए जाने पर बाबू राठौर को निलंबित कर दिया, जबकि बीईओ कार्यलय से हटाए गए रामचंद्र अटकान ने बाबू राठौर को चार्ज सोपते समय पिछला रिकॉर्ड नही दिया था, जिससे बाबू राठौर ने नया अपना रेकॉर्ड मेंटेन करना शुरू कर दिया, जिसे संभाग उपायुक्त ने कार्य मे गंभीर लापरवाही मानते हुए निलंबित कर दिया ओर बाबू राठौर का कार्य बाबू उपेंद्र जोशी को दे दिया गया। बाबू राठौर का कार्यकाल केवल 8 माह का रहा इस दौरान बाबू अटकान ने बहन लक्ष्मीबाई खुंडिया का अनुपस्थिति के समय का वेतन निकलवाने का प्रयास किया था जो कि नियम विरुद्ध होने के कारण बाबू शिवदत्त राठौड़ ने भुगतान करने से मना कर दिया। केशबुक में मामूली गलती की आड़ लेकर एक बार फिर बाबू अटकान ओर जोशी की जोड़ी ने अपना काम निकलवा लिया जिसके पीछे अधिकारीयो की मंशा भी साफथी यदि कोई और बाबू इस सीट पर टिकता तो उनके राज बहार आ सकते थे।

कलेक्टर से लेकर विभागीय मंत्री व मुख्यमंत्री तक हो चुकी शिकायत

बाबू रामचंद्र अटकान के पूरे परिवार की अवैध नियुक्तियो की शिकायत रमेश धानुक द्वारा जन सुनवाई, सीएम हेल्पलाइन से लेकर मुख्यमंत्री और विभाग के बड़े उच्च अधिकारी से लेकर विभाग के मंत्री तक को शिकायात की गई, लेकिन अब तक कोई कार्रवाई नही हुई। शिकायतकर्ता रमेश धानुक का कहना है कि, शिकायत के बाद भी अधिकारियों द्वारा कोई कार्रवाई शासन हित मे नही की, मेरे द्वारा 15. फरवरी .2017 को अवैध नियुक्ति को लेकर जनसुनवाई में जिसका क्रमांक 11561 मिला, फिर मामले की शिकायत सीएम हेल्पलाइन पर 3 जनवारी 2017 क्रमांक 3427325, 21 सितम्बर 2017 को सहायक आयुक्त आदिवासी विभाग झाबुआ से लेकर लगातार मुख्यमंत्री, सामान्य प्रशासन विभाग तक शिकायत की लेकिन कोई उचित कार्रवाई नही हुई। जिसके बाद शिकायतकर्ता द्वारा 22. अक्टुम्बर 2019 स्वयं भोपाल उपस्थित होकर आयुक्त आदिवासी भोपाल और मुख्यमंत्री के प्रमुख सचिव को शिकायत की गई, लेकिन नतीजा हर बार की तरह ही जस के तस रहा। 13 जुन 2020 को फिर से शिकायतकर्ता द्वारा कलेक्टर से लेकर मुख्यमंत्री को शिकायत भेज कर कार्रवाई की मांग पूरे प्रमाणित दस्तावेजों के साथ कि, लेकिन ऊपर से कोई उच्च स्तरीय जांच करवाने की बजाए हर बार जांच जिले के उन्ही अधिकारीयो को भेज दी गई जिनकी भूमिका पहले ही संदिग्ध है और उन्होंने इन जांचों को यही दबाकर अब तक उच्च अधिकारियों को गुमराह कर रखा है। जिसका खुलासा मय प्रमाण के गूंज में आने वाले अंको में किया जाएगा की किस तरह से जाच के नाम पर बड़े स्तर पर हुए भष्टाचार को दबाया गया।

निरन्तर...

चुनावी तस्वीर साफ, मैदान में बचे तीन प्रत्याशी

भाजपा-कांग्रेस के बीच होगी सीधी टक्कर, जनता के पास ऑप्शन में होगी बीएसपी

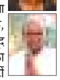

माही की गूंज, पेटलावद/बदनावर।

3 नवंबर को विधानसभा उपचुनाव के लिए होने वाले मतदान से पूर्व, मैदान में उतरने वाले प्रत्याशियों की तस्वीर अब साफ हो गई है। नाम निर्देशन, पत्र वापस लेने के अंतिम दिन 2 प्रत्याशियों द्वारा नाम वापस लेने के बाद अब मैदान में त्रिकोणीय मुकाबला होगा। जिसमें भारतीय जनता पार्टी से राजवर्धनसिंह दत्तीगांव, कांग्रेस से कमलसिंह पटेल एवं बहुजन समाज पार्टी से ओमप्रकाश मालवीय चुनाव मेदान में है। नाम निर्देशन वापस लेने के अंतिम दिन निर्दलीय प्रत्याशी रईस पटेल पीथमपुर एवं सुनील कुमार जैन बदनावर ने नाम वापस ले लिए।

बदनावर में पिछ्ले कई चुनावों से 3 से अधिक उम्मीदवार अपना भाग्य आजमाते रहे हैं। 2018 के चुनाव में भी 8 प्रत्याशी खड़े हुए थे किंतु इस बार केवल 3 प्रत्याशी ही मैदान में रहे हैं। हालांकि फर्म जमा करने के अंतिम दिन तक कांग्रेस व भाजपा प्रत्याशियों की सांसे ऊपर-नीचे होती रही कि, कोई दावेदार बागी बनकर मैदान में नहीं कूद पड़े क्योंकि इन पार्टियों के प्रत्याशियों का पुराना बहुत कटु अनुभव रहा है। जिस पार्टी का बागी प्रत्याशी चुनाव में खड़ा हुआ उस पार्टी के अधिकृत प्रत्याशी को पराजय का सामना करना पड़ा। इस स्थिति में इस बार दोनों प्रमुख पार्टियों के प्रत्याशी राहत की सांस ले रहे हैं कि, उनके बीच सीधा मुकाबला ही होगा। प्रत्याशियों के नाम तय होने के बाद बदनावर विधानसभा के लिए भाजपा और कांग्रेस में सीधा मुकाबला होना तय माना जा रहा है यदि जनता इनके अलावा किसी और पर विश्वास जताती है तो जनता के पास केवल बीएसपी प्रत्याशी के अलावा ऑप्शन में कोई नही है ।

शुजालपुर में झोलाछाप डॉक्टरों की भरमार

माही की गूंज, शाजापुर। अजय राज केवट

जिला चिकित्सा अधिकारी शाजापुर के बदले तेवर सीटी केयर हॉस्पीटल शुजालपुर में प्रसुता की मोत के सम्बन्ध में कहना है कि, इमरजेन्सी के चलते महिला चिकित्सक आभा जैन ने ऑपरेशन किया था। जबकि परिवार के सदस्यों का कहना है कि, पिछले एक माह से आभा जैन के पास महिला का ईलाज चल रहा था ओर सोच समझ कर ही स्वस्थ महिला का ऑपरेशन अधिक से अधिक पैसा ऐंठने के लिए किया था। किन्तु आभा जैन की लापरवाही को छुपाने व पिडितो के आक्रोश को दबाने के लिए अस्पताल को सिल कर मात्र कार्रवाई की इतिश्री की जा रही हैं। मौत के इन सौदागरो को संरक्षण देकर आखिर प्रसाशन क्या साबित करना चाहता यह समझ से परे है। कहा ये ही जा रहा है कि, जवाबदार उच्च अधिकारी अपनी चंदा चोरी के कारण सांठ-गांठ के चलते मौत के सौदागर झोलाछाप डॉक्टरो को संरक्षण देकर गरिबो की जान से खिलवाड़ कर रहे है, अब जनता किससे न्याय की उम्मीद करेगी यह सवाल अहम बन चुका है। वही प्राइवेट हॉस्पिटलो में परिजन द्वारा जब अपने मरीज की हालत बिगड़ते देख वो जब दूसरे हॉस्पिटल ले जाने के लिए छुट्टी मांगते है तो निजी हॉस्पिटल मालिक और डॉक्टर वहां से मरीज को नही ले जाने देते है। जब मरीज की मौत हो जाती है तो वही अधिकारीयो के सामने बोला जाता है कि, हमने परिजनों से बोला था की आप बाहर ले जाए। शुजालपुर में आशा पति अजय मिना का ये कोई नया मामला नही है इससे पहले भी कई हॉस्पिटल में मौत हो चुकी है। शुजालपुर सिटी हॉस्पिटल में भी सुविधाओं के नाम पर परिजनों को परेशान किया जाता है, गभर्वती महिलाओं को लेकर परिजन सिविल हॉस्पिटल लेकर जाते है तो गर्भवती महिला के पति से सिग्नेचर पहले करवा लिए जाते है और बोल दिया जाता है महिला व बच्चे के साथ मे अगर कोई घटना घटित होती है तो हम जिम्मेदार नही है। सिटी हॉस्पिटल में रात के समय कोई महिला संबंधित डॉक्टर उपलब्ध नही रहती है वहा के स्टाफ द्वारा बोला जाता है कि, आपकी मर्जी पड़े तो निजी हॉस्पिटल ले जा सकते हो तो निजी हॉस्पिटल भी वही बताया जाता है जहा सरकारी डॉक्टर व नर्सेसं का कमीशन तय रहता है।

शुजालपुर के झोलाछाप डॉक्टरो का होगा खुलासा निरंतर...

भ्रष्ट जनपद सीईओ चौहान ने जनपद उपाध्यक्ष की रिपोर्ट पर बावड़ी सचिव को जनपद में किया अटैच

नेता की शिकायत पर नाप दिया सचिव को लेकिन भष्टो को जांच प्रतिवेदन के नाम पर दिया संरक्षण

माही की गूंज, पेटलावद।

जनपत पंचयात पेटलावद में एक ऐसा मामला सामने आया है जिसके बाद किसी के मन मे ये संशय नही रहेगा कि, अधिकारी और सत्ताधारी दल के नेता किस कदर भ्रष्टो को संरक्षण देकर बचाते हैं। अखबार की स्याही से पंचायतो के भ्रष्टाचार के काले कारनामो को कितना ही क्यो नही रंग दिया जाए अधिकारी जाँच का आश्वासन दे कर जैसे-तैसे बचा लेते है, जब कोई कार्यवाही नही होती तो साहब ये कह कर बच जाते हैं कि, हमको कार्यवाही का अधिकार नही है हम प्रतिवेदन बनाकर ऊपर अधिकारी को भेज देते हैं जो कार्यवाही करना है उनको करना है। खेर होता भी यही है लेकिन बात जब अखबारों में छपी खबरों की न होकर किसी नेता के मान सम्मान की होती हैं तो उनके कहने पर भ्रष्टो को बचा लेते हैं और उनके कहने पर बिना किसी गलती के अपने स्तर पर निपटा भी देते है। विकास खण्ड की एक या दो नही, कम से कम 50 पंचायतों में खुले और ऑफद रिकॉर्ड हुए भ्रष्टाचार की शिकायत हो कर जाँच प्रतिवेदन कार्यवाही के लिए भेजे जा चुके है लेकिन आज तक किसी प्रकार की कार्रवाई नही हुई। जब नेता जी के मान सम्मान पर जैसे ही बात आई तो गुलाम हुए अधिकारी अपनी कलम चलाने में बिलकुल देर नही करते।

मामला ग्राम पंचायत बावडी का है जहाँ के सचिव रायचन्द गामड़ को किसी शिकायत या भ्रष्टाचार के कारण नही जनपत पंचायत के उपाध्यक्ष की रिपोर्ट के अनुसार तत्काल प्रभाव से हटाकर अगले आदेश तक जनपत पंचयात पेटलावद में अटैच कर दिया। आखिर शिकायत और रिपोर्ट क्या थी ये अधिकारी बता नही रहे हैं बस नेता जी का दबाव आया और कलम चल गई।

जो अब तक ये कहते आ रहे थे कि, हमे कार्यवाही करने का अधिकार नही है। उसके उलट विगत दिनों ग्राम पंचायत तारखेड़ी जसमे बिना कार्य किए सीसी रोड की राशि फर्जी बिल लगाकर आहरण करने का मामला आया था। जॉच के बाद मामला भ्रष्टाचार होने का भी पाया गया लेकिन यहाँ जनपत सीईओ ने अपना प्रतिवेदन जिले में भेज इतिश्री कर ली और सचिव पर तत्काल में कोई कार्रवाई नही की। अब जिले से सरपंच-सचिव को जबाब के लिए कारण बताओ नोटिस जारी किए जा रहे हैं जिन पर कब तक कार्रवाई होगी ये तय नही है। अपने आप को ईमानदार बताने वाले जनपत सीईओ एनएस चौहान के द्वारा बिना किसी मजबूत कारण और शिकायत के बावडी सचिव को जनपत में अटैच कर नेताओं की गुलामी ओर भ्रष्टाचार में खुद भी लिप्त होने का प्रमाण दे दिया, जबकि कई रोजगार सहायक और सचिवों की प्रमाणित शिकायतो के बाद भी जनपत सीईओ ने अपनी और से कोई कार्रवाई नही करते हुए अधिकार क्षेत्र में नही होने का झूठा हवाला देते रहे हैं। वही आज तक किसी प्रकरण में भ्रष्टाचार सिद्ध होने के बाद भी आज तक प्रकरण दर्ज करने की अनुशंसा कर अधिकारी को प्रतिवेदन नही दिया गया। मामले जिला सीईओ से चर्चा करना चाहा लेकिन उन्होंने कॉल रिसीव नही किया।

पिता ने बहु से की छेड़खानी तो पुत्र ने पिता को दी मौत की सजा

पुलिस को सुचना देने वाला ही निकला हत्यारा

माही की गूंज, अलीराजपुर।

विगत दिनों थाना आंबुआ क्षेत्र के ग्राम झिरण में घटित अंधेकत्ल का पुलिस के द्वारा पर्दाफाश कर पिता के हत्या के आरोपी पुत्र को गिरफ्तार किया गया है।

आंबुआ थाना अन्तर्गत ग्राम झिरण के फरियादी किरगिया पिता खेलसिंह मावी भील, द्वारा सूचना दी गई थी कि, उसके पिता खेलसिंह की घर के आंगन में किसी अज्ञात व्यक्ति द्वारा 14 अक्टूबर की रात्रि में कुदाली से सिर में चोट पहुंचा कर हत्या कर दी है, जिसकी रिपोर्ट पर से थाना आम्बुआ में अपराध क्र. 172/20 धारा 302 भादवि का पंजीबद्ध कर घटना को अनुसंधान में लिया गया था।

घटना घर के आंगन में अज्ञात व्यक्ति के द्वारा किए जानें से आंबुआ पुलिस के द्वारा घटना के आरोपी को ज्ञात करनें के लिए घटना के हर पहलू पर गंभीरता से जांच की गई, जिसमें घटनास्थल के आस-पास साक्षियों की तलाश के दौरान एक चश्मदीद साक्षी से पूछताछ के दौरान उसके द्वारा बताया कि, मृतक खेलसिंह के द्वारा खुद के पुत्र फरियादी/आरोपी किरगिया की पत्नि के साथ बुरी नीयत से हाथ पकड़ने की बात को लेकर फरियादी/आरोपी किरगिया परेशान था, जिसके चलते किरगिया ने कुदाली मारकर उसके पिता की हत्या कर दी। उक्त साक्ष के बाद आंबुआ पुलिस द्वारा 18 अक्टूबर को हत्या के आरोपी किरगिया उर्फ कलमसिंह को गिरफ्तार कर लिया गया तथा आरोपी ने पुलिस की पुछताछ में अपने पिता की कुदाली से मारकर हत्या करना कबुल किया।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, अलका भटेवरा द्वारा काम्पेक प्रिन्टर्स प्रायवेट लिमिटेड, 3/54, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 499, बाजना मार्ग, गणेश मंदिर के सामने, खवासा, तहसील थांदला, जिला-झाबुआ (म.प्र.) से प्रकाशित। प्रधान संपादक- संजय भटेवरा, संपादक- धर्मेन्द्र पंचाल । मोबाइल नं. -95898-82798 (सभी विवादों का न्यायालय क्षेत्र झाबुआ रहेगा) आरएनआई नंबर- एमपीएचआईएन/2018/76422